

अख़बद भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज

रविवार 16 जून 2024

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

तेजस्वी के बयान पर बिहार में छिड़ा घमासान

नई दिल्ली तेजस्वी यादव के बयान पर बिहार में सियासत गरमा गई है। ललन सिंह के बाद अब गिरिराज सिंह और जीवन राम मांझी ने भी पलटवार किया है। दरअसल, तेजस्वी यादव ने एक बयान में कहा था कि नीतीश कुमार की सरकार में यादवों को टारगेट कर गोली मारी जा रही है। इस बयान के बाद बिहार में सत्ता पक्ष और विपक्ष आमने सामने हैं।

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि अपराधियों की कोई जाति नहीं होती है। उन्होंने कहा कि जनता ने जिन्हें क्लिचुचैर पर बैठा दिया है, वही आज बोल रहे हैं। इससे पहले केंद्रीय मंत्री ललन सिंह ने कहा था कि घटनाओं को जो अंजाम देगा वो जेल जरूर जाएगा। इसे किसी जाति से जोड़कर देखे जाने की जरूरत नहीं है।

केंद्रीय मंत्री जीवन राम मांझी ने भी तेजस्वी के बयान पर प्रतिक्रिया दी। मांझी ने कहा कि हम जाति नहीं देखते, जो भी क्राइम करेगा वो मारा जाएगा। क्राइम करने वालों पर तत्काल कार्रवाई होगी। नीतीश सरकार न किसी को फंसाती है और किसी को बचाती है। न्यायोचित काम किया जाता है। उनके (तेजस्वी) पिता जी के राज में क्या होता था अपहर, लूट और हत्याओं का नेगोशिएशन सीएम हाउस में होता था। वो आज नहीं हो रहा है। फिर उन्हें कहने का क्या अधिकार है गलत करने वाले पर कार्रवाई होगी ही, चाहे वो जिस जाति का हो।

300 महिला विज्ञानिकों को शोध के लिए मिलेगा अनुदान

नई दिल्ली विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह ने शुक्रवार को कहा कि सीएसआईआर-एएसपीआईआरई योजना के तहत 300 महिला वैज्ञानिकों को तीन वर्ष शोध करने के लिए अनुदान दिया जाएगा।

नागरिकों को बनाना है सशक्त: जितेंद्र सिंह वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में इनोवेशन का उद्देश्य नागरिकों को सशक्त बनाना है।

विभिन्न क्षेत्रों में मिलेगा शोध को बढ़ावा केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सीएसआईआर-एएसपीआईआरई योजना के तहत लगभग 3000 प्रस्ताव मिले हैं।

ज्यादा दिन नहीं चलेगी एनडीए सरकार: खरगे

मोदी के पास जनादेश नहीं है, यह अल्पमत की सरकार, यह सरकार कभी भी गिर सकती है: खरगे

बंगलूरु

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का दावा है कि एनडीए सरकार ज्यादा दिन नहीं चलेगी और ये कभी भी गिर सकती है। खरगे ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को अपने सहयोगियों को एकजुट रखने में काफी परेशानी हो रही है।

कभी भी गिर सकती है ये सरकार बंगलूरु में मीडिया से बात करते हुए मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि 'एनडीए सरकार गलती से बनी। मोदी जी के पास जनादेश नहीं है, यह अल्पमत की सरकार है। यह सरकार कभी भी गिर सकती है। उन्होंने कहा, 'हम चाहते हैं कि यह जारी रहे, यह देश के लिए अच्छा है, हमें देश को मजबूत बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।' उल्लेखनीय है कि 543 सदस्यों वाली लोकसभा में बहुमत का आंकड़ा 272 है, लेकिन भाजपा बहुमत के आंकड़े से काफी पीछे रही और 240 सीटों पर ही जीत दर्ज कर सकी। ऐसे में सरकार बनाने के लिए भाजपा एनडीए गठबंधन के सहयोगियों पर निर्भर है। जिनमें 16 सीटें जीतने वाली तैय्या, 12 सीटें जीतने वाली जदयू और एकनाथ शिंदे की शिवसेना (7) और लोजपा (5) प्रमुख हैं।

खरगे के बयान पर एनडीए का पलटवार खरगे के बयान पर जदयू ने पलटवार किया है और उनसे पूछा कि जब कांग्रेस ने गठबंधन की सरकार बनाई थी, तब उनके प्रधानमंत्री का रजिस्ट्रार कार्ड क्या थे बता दें कि साल 1991 के लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस ने भी इतनी ही सीटें



देखना यह है कि यह सरकार कितने दिन चलेगी है: उद्धव ठाकरे

नई दिल्ली लोकसभा चुनाव में महाअघाड़ी दल का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा। महाराष्ट्र में कांग्रेस 13, शिवसेना (उद्धव गुट) 9, एनसीपी (एसपी) 7 सीटें जीतने में कामयाब रही। वहीं, इसी साल महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव भी होने वाले हैं। लोकसभा चुनाव के रिजल्ट और आगामी विधानसभा चुनाव पर चर्चा करने के लिए महाअघाड़ी दल के प्रमुख नेताओं के बीच (15 जून) बैठक हुई। बैठक में उद्धव ठाकरे, शरद पवार, कांग्रेस नेता पृथ्वीराज चव्हाण सरीखे नेता शामिल हुए।

बैठक में शिवसेना (उद्धव गुट) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा, "यह

जीतनी थी, जितनी भाजपा ने 2024 में जीती है। बिना किसी स्पष्ट बहुमत के



(लोकसभा चुनाव) संविधान और लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई थी। जल्द ही विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। यह सरकार मोदी सरकार थी और अब यह एनडीए सरकार बन गई है। अब देखना यह है कि यह सरकार कितने दिन चलेगी है।" वहीं, एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने कहा, "जहां भी प्रधानमंत्री का रोड शो

कांग्रेस ने पीवी नरसिम्हा राव के नेतृत्व में अल्पमत की सरकार बनाई थी। हालांकि

जनता का धन्यवाद करने और सभी के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक साथ आए हैं। महाराष्ट्र की जनता ने एमवीए उम्मीदवारों को विजयी बनाया है। लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद पहली बार आज महाराष्ट्र के भारत गठबंधन के नेता मिले हैं। पृथ्वीराज चव्हाण ने आगे कहा कि यह प्रेस कॉन्फ्रेंस जनता का धन्यवाद करने के लिए है। हमें महाराष्ट्र में अच्छी संख्या में वोट मिले हैं। हम सभी लोकतंत्र को बचाने के लिए एक साथ आए हैं। मुझे उम्मीद है कि जिस तरह से लोगों ने लोकसभा चुनाव में हमें वोट दिया, वैसा ही प्यार हमें विधानसभा चुनाव में भी मिलेगा और अब महाराष्ट्र में सत्ता परिवर्तन होगा।

और रैली हुई, वहां हमारी जीत हुई। इसलिए मैं प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ। महाराष्ट्र की जनता ने एमवीए उम्मीदवारों को विजयी बनाया: पृथ्वीराज चव्हाण

कौन बनेगा लोकसभा स्पीकर? आमसहमति न बनने पर विपक्ष अध्यक्ष पद के लिए उतारेगा उम्मीदवार



नई दिल्ली लोकसभा चुनाव के बाद संसद का पहला सत्र 24 जून से शुरू होगा, जो तीन जुलाई तक चलेगा। इस दौरान 26 जून को नई लोकसभा के अध्यक्ष का भी चयन होगा है। वैसे तो पिछले दो बार से बगैर किसी टकराव के लोकसभा अध्यक्ष का चयन होता आया है, लेकिन इस बार चुनाव में मजबूत होकर उभरे विपक्ष ने लोकसभा उपाध्यक्ष पद के लिए दावेदारी शुरू कर दी है। फिलहाल जो संकेत मिल रहे हैं, उसमें विपक्ष सहमति के आधार पर लोकसभा उपाध्यक्ष पद की मांग रखेगा लेकिन यदि सहमति नहीं बनी तो वह लोकसभा अध्यक्ष के लिए भी अपना प्रत्याशी मैदान में उतार सकता है। आम तौर पर उपाध्यक्ष विपक्ष से होने की परंपरा रही है

इस बीच लोकसभा में विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस ने अपने सहयोगी दलों के साथ उपाध्यक्ष पद को लेकर चर्चा शुरू करेगा। आम तौर पर यह परंपरा रही है की उपाध्यक्ष विपक्ष से होता है। लोकसभा में इस बार स्थिति काफी बदली हुई होगी। दस साल बाद विपक्ष का कोई नेता सदन में होगा। साथ ही विपक्ष की संख्या भी अच्छी रहेगी। ऐसे में वह हर मौके को भुगाने की पूरी कोशिश करेगा। लोकसभा चुनाव में विपक्षी गठबंधन को इस बार 233 सीटें मिली है। इनमें अकेले कांग्रेस की करीब 99 सीटें हैं। 2014 में भाजपा के सत्ता में आने के बाद 16वां लोकसभा में डिप्टी स्पीकर पद भाजपा की अगुवाई वाले राजग ने अन्नाद्रमुक को दिया गया था। जिसकी ओर से एम थंबीदुरई डिप्टी स्पीकर बनाए गए थे।

भारत ने दो वर्षों में 40 से अधिक क्वांटम टेक्नोलॉजी स्टार्ट-अप किए तैयार: डॉ जितेंद्र

नई दिल्ली

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ जितेंद्र सिंह ने शनिवार को कहा कि भारत ने दो वर्षों में 40 से अधिक क्वांटम प्रौद्योगिकी स्टार्ट-अप का उत्पादन किया है, उनमें से कुछ वैश्विक क्षमता वाले हैं। भारत 'दुनिया की स्टार्टअप राजधानी' बन रहा है। साल 2014 से पहले इसकी संख्या कुछ ही थी जो साल 2024 में बढ़कर 1.25 लाख से अधिक हो गया है और 110 से अधिक यूनिफॉर्म स्टार्टअप अंतरिक्ष जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी उल्लेख काम कर रहे हैं। शनिवार को नई दिल्ली में विज्ञान और प्रौद्योगिकी



विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने अधिकारियों को प्रमुख राष्ट्रीय क्वांटम मिशन पर ध्यान केंद्रित करने और क्वांटम प्रौद्योगिकियों और क्वांटम संचार के विकास पर काम करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा

कि क्वांटम प्रौद्योगिकियों के मामले में भारत वर्तमान में अन्य देशों के साथ बराबरी पर है। हमारा मिशन और दृष्टिकोण क्वांटम प्रौद्योगिकियों के मामले में भारत को एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करना होना चाहिए।

महंगाई की मार: कर्नाटक में पेट्रोल और डीजल की कीमतें बढ़ीं

नई दिल्ली

कर्नाटक में पेट्रोल और डीजल की कीमतें 3 रुपये और 3.05 रुपये तक बढ़ा दी गई है। राज्य में कीमतों में बढ़ोतरी को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस पर हमला बोला है। भाजपा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी का असली चेहरा सामने आ गया है। शनिवार को मीडिया से बातचीत में भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि कांग्रेस पार्टी कहती है कि देश में महंगाई है और फिर कांग्रेस पार्टी और उसकी अपनी राज्य सरकारें पेट्रोल और डीजल की कीमतें बढ़ाती हैं। कर्नाटक में उन्होंने किसान विरोधी,



आम आदमी विरोधी आदेश पारित किया, एक फतवा, एक जजिया कर और उन्होंने पेट्रोल और डीजल

की कीमतों में 3 रुपये और 3.05 रुपये की वृद्धि की है। डीजल का रेट भी 85.93 रुपये

शहजाद ने कहा कि आज एक बात बहुत स्पष्ट हो गई है कि कांग्रेस पार्टी केवल आम आदमी का पैसा लूटना और छीनना चाहती है। राहुल गांधी जिन्होंने कहा था कि खट खट खट खट एक लाख रुपये खातों में जमा किए जाएंगे, क्या वे अब कर्नाटक और हिमाचल में महिलाओं के बैंक खातों में पैसे जमा करेंगे? सिर्फ आम आदमी पर कीमतें बढ़ाकर बोझ बढ़ाएंगे। इस बढ़ोतरी के बाद बेंगलूरु में पेट्रोल की कीमत 99.84 रुपये प्रति लीटर से बढ़कर 102.84 रुपये प्रति लीटर हो गई है। डीजल का रेट भी 85.93 रुपये

सेमीकंडक्टर उद्योग की रणनीतिक अहमियत: कुमारस्वामी



नई दिल्ली /एजेंसी केंद्रीय भारी उद्योग और सार्वजनिक उद्यम मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने शनिवार को बताया कि अमेरिकी सेमीकंडक्टर फर्म माइक्रोन के बारे में उनकी कथित टिप्पणी को गलत तरीके से पेश किया जा रहा है। 11 जून को केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री के रूप में एचडी कुमारस्वामी ने कार्यभार सभाला। उन्हें इस्पात मंत्रालय का प्रभार सौंपा गया। उन्होंने अपने मंच पर लिखा, केंद्रीय इस्पात मंत्री के रूप में पदभार संभालने के बाद पहली फाइल पर हस्ताक्षर किए। यह मेरे गृह राज्य कर्नाटक से संबंधित है। कुमारस्वामी ने देवदरी लौह अयस्क खदान के संचालन के लिए केआईओसीएल लिमिटेड की पहली फाइल पर हस्ताक्षर किए। इस्पात मंत्रालय के सचिव श्री नागेंद्र नाथ सिन्हा मौजूद रहे। इससे

पहले उन्होंने लोकसभा चुनावों में मांड्या से सांसद चुने जाने के बाद विधायक के रूप में अपना इस्तीफा सौंपा। हाल ही में कुमारस्वामी ने सोशल मीडिया पोस्ट पर लिखा कि दरअसल सेमीकंडक्टर एक प्रकार का उद्योग है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबाइल विनिर्माण के लिए एक बुनियादी आवश्यकता है। दोनों क्षेत्र बहुत सारे रोजगार पैदा करते हैं। मैं पीएओ कार्यालय की कंडक्टर संबंधी पहल की सराहना करता हूँ, अपने मंत्रालय के माध्यम से उन्हें पूरा करने की दिशा में काम करूंगा।

14 जून को प्रकाशित एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार गुजरात में यूएस आधारित माइक्रोन टेक्नोलॉजी द्वारा 2.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर की सेमीकंडक्टर इकाई जैसे निवेश की आवश्यकता पर सवाल उठाया है।

पीएम मोदी किसान योजना की 17वीं किस्त 18 जून को करेंगे जारी

नई दिल्ली प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पीएम किसान योजना के तहत 20,000 करोड़ रुपये की 17वीं किस्त वाराणसी से 18 जून को जारी करेंगे। इस मौके पर स्वयं सहायता समूहों को प्रमाण पत्र प्रदान करेंगे। यह जानकारी केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शनिवार को पत्रकार वार्ता में दी। केंद्रीय कृषि मंत्री चौहान ने आज कहा कि कृषि व किसान प्रधानमंत्री की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है।



तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद सबसे पहले 9.26 करोड़ से अधिक लाभार्थी किसानों को पीएम किसान योजना के तहत 20,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि

भी प्रदान करेंगे। एक प्रतीक के रूप में प्रधानमंत्री 5 कृषि सखियों को प्रमाण पत्र वितरित करेंगे। केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि किसान सम्मान निधि 24 फरवरी 2019 को शुरू की गई एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है, जिसका उद्देश्य भूमि-धारक किसानों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करना है। भारत सरकार ने देश भर में अब तक ऐसे 11 करोड़ से अधिक किसानों को 3.04 लाख करोड़ रुपये से अधिक धनराशि का वितरण किया है।

ट्रायल सफल: अब मोबाइल पर हर कॉलर का नाम दिखेगा

नई दिल्ली

अब फोन पर अनजान नंबर से कॉल आने पर कॉलर का नाम भी दिखाई देगा। रिपोर्ट के अनुसार टेलिकॉम कंपनियों ने मुंबई और हरियाणा सर्किल में ट्रायल शुरू कर दिया है। आने वाले समय में अन्य शहरों में भी ये सर्विस शुरू करने की योजना है। कॉलिंग नेम प्रेजेंटेशन को स्पैम और फ्रॉड कॉल को रोकने के तरीके के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें हाल के दिनों में बढ़ोतरी देखी गई है। सरकार और टेलिकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया के दबाव के बाद कंपनियों ने यह टेस्टिंग शुरू की है। टेलिकॉम कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि कैसे काम कर रहा है, इसका अमेरिकी डॉलर की सेमीकंडक्टर इकाई जैसे निवेश की आवश्यकता पर सवाल उठाया है।



वाले का नाम भी दिखाई देगा। हम टेस्टिंग के रिजल्ट को डिपार्टमेंट ऑफ टेलिकॉम्युनिकेशन के साथ शेयर करेंगे, ताकि प्रस्तावित सर्विस के बारे में एक व्यावहारिक निर्णय लिया जा सके। टूकॉलर की तरह होगी यह सर्विस

हाल ही में सरकार ने फेक इंटरनेशनल-कॉलर्स को ब्लॉक करने के लिए कहा था हाल ही में सरकार ने टेलिकॉम ऑपरेटर्स को उन सभी फेक इंटरनेशनल कॉलर्स को ब्लॉक करने का निर्देश दिया है, जो कॉल आने पर भारतीय नंबर दिखाई देते हैं। डिपार्टमेंट ऑफ टेलिकॉम को इससे जुड़ी शिकायतें मिल रही थीं। इन कॉलर्स के जरिए लोगों के साथ साइबर फ्राड और फाइनेंशियल फ्रॉड किया जा रहा है। सवाल- स्पैम कॉल या मैसेज क्या होते हैं

सर्विस या सामान खरीदने का झांसा दिया जाता है। यह सभी कॉल या मैसेज आपकी अनुमति के बिना की जाती हैं। सवाल- किन लोगों को स्पैम कॉल ज्यादा आ सकते हैं जवाब- आमतौर पर स्पैम कॉल उन लोगों को ज्यादा आते हैं, जो स्पैम कॉल उठाते हैं और उसका जवाब देते हैं। स्पैम कॉल का जवाब देने से आपका नंबर कंपनी के पास उन नंबरों की लिस्ट में जुड़ सकता है, जो उनका फोन आम तौर पर उठाते हैं और रिसपांस देते हैं, क्योंकि एडवर्टाइजमेंट कंपनियां या स्कैमर्स सोचते हैं कि इन लोगों को कभी-न-कभी निशाना बनाया जा सकता है। इसलिए आप जितना कम स्पैम के जाल में फंसेंगे, आपको उतनी ही कम स्पैम कॉल आएंगी।

पुरानी रंजिश में पिता-पुत्र पर ताबड़तोड़ बरसाई गई गोलियां, बेटे की मौत

परिजनों की तहरीर पर 4 के खिलाफ मुकदमा दर्ज, आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए गठित की गई 5 टीमें

अखंड भारत संदेश

बारा/प्रयागराज। बारा थाना क्षेत्र के बेलाव गांव में शुक्रवार को सुबह पुरानी रंजिश को लेकर गांव के ही कुछ लोगों ने खेत में काम कर रहे पिता-पुत्र पर ताबड़तोड़ गोलियां बरसानी शुरू कर दी। तीन गोली लगने से बेटे की मौत हो गई। घटना के बाद आरोपी फरार हो गए। सूचना पाकर तमाम आला अधिकारी मौके पर पहुंच गए। आरोपियों की खोजबीन में पुलिस जुट गई है।

जानकारी के अनुसार बारा थाना क्षेत्र के बेलाव गांव में सुबह सात बजे खेत की जुताई करने गए पिता पुत्र पर गांव के ही कुछ लोगों ने पुरानी रंजिश को लेकर गोलियां बरसानी शुरू कर दी। गोली लगने से मनीष मिश्र (27) पुत्र संतोष मिश्र की मौत हो गई। संतोष मिश्र ने बताया कि होली पर शराब के नशे में आरोपी राजेश उर्फ साकेत बिहारी पाण्डेय से विवाद हुआ था। उसी बात से खुनस खाए राजेश ने अपने पिता व चचेरे



भाई के साथ असलहा लेकर सुबह खेत पर पहुंच गया। बिना कुछ बताए मनीष पर ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। तीन गोली मनीष को लगी। उसे अस्पताल ले जा रहे थे कि रास्ते में ही उसकी सांसें थम गईं। घटना की सूचना पर डीसीपी नमुनागर श्रद्धा नरेंद्र पाण्डेय, एसीपी बारा व

कौंधियारा के साथ मौके पहुंचकर छानबीन की। मारपीट और हत्या का क्या है पूरा मामला...

बेलाव के रहने वाले मनीष मिश्रा की गांव के ही राजेश पांडे से पुरानी रंजिश थी। अक्सर दोनों परिवारों के बीच कहासुनी होती रहती थी। शुक्रवार सुबह 27 वर्षीय मनीष अपने पिता संतोष के साथ खेत में काम कर रहे थे। तभी गांव के ही राजेश पाण्डेय कई लोगों के साथ पहुंचे और मनीष को अपशब्दों का प्रयोग करने लगे जिस पर मनीष ने विरोध किया तो गोलियां बरसानी शुरू कर दी। जिस पर मनीष के सिर में 3 गोली मारी गईं आनन-फानन में उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलते ही पुलिस अधिकारियों के साथ ही बारा, घुरपुर समेत आसपास के थाने की पुलिस मौके पर पहुंच गई आरोपियों के यहां छापेमारी की जा रही है।

न्यूज झरोखा

आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता हेतु समस्त थानाध्यक्षों के साथ सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न

प्रयागराज। शनिवार को माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिनांक 29.7.2024 से दिनांक 03.08.2024 तक आयोजित होने वाली विशेष लोक अदालत एवं दिनांक 13.7.2024 को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता हेतु समस्त थाना के थानाध्यक्ष की बैठक जनपद न्यायालय सभागार में माननीय जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रयागराज संतोष राय के निदेशानुसार व दिनेश कुमार गौतम सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की अध्यक्षता में आयोजित की गई। समस्त थानों के थानाध्यक्ष को बैठक में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा आयोजित विशेष लोक अदालत 29.7.2024 से 3.8.2024 एवं राष्ट्रीय लोक अदालत दिनांकित 13.7.2024 हेतु नोटिस तामील के संबंध में दिशा निर्देश प्रदान किए गए और अधिक से अधिक नोटिस की तामिला करकर माननीय सर्वोच्च न्यायालय की विशेष लोक अदालत एवं राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता हेतु निर्देश प्रदान किए गए। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट शशि कुमार द्वारा समस्त थाना अध्यक्षों को पुरानी फाइलों में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी दिशा निर्देश को बताया गया और कहा गया कि इसको प्राथमिकता के आधार पर इसकी पैरवी करना सुनिश्चित करें, जिससे इनका निस्तारण किया जा सके। यह जानकारी सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण दिनेश कुमार गौतम द्वारा प्रदान की।

बैनामों के दाखिल खारिज में बार एसोसिएशन के प्रयास से लेखपाल के नामांतरण रिपोर्ट समाप्त



सौरां। बार एसोसिएशन सौरांव के कार्यकारिणी की बैठक शनिवार को सभागार कक्ष में आहुति की गई। जिसकी अध्यक्षता बार एसोसिएशन के अध्यक्ष केके मिश्रा ने किया। इस बैठक में तहसील में व्याप्त भ्रष्टाचार व लेखपालों द्वारा बैनामों में लगाई जाने वाली नामांतरण रिपोर्ट का मुद्दा छया रहा। इसी क्रम में अध्यक्ष कमला कांत मिश्रा ने पूर्व में हुए बार बेंच की मौखिक वार्ता के आधार पर तहसील में होने वाले बैनामों पर अब लेखपालों द्वारा लगाई जाने वाली नामांतरण की रिपोर्ट को समाप्त कर दिया गया है। इस बात को लेकर अधिवक्ताओं में खुशी रही। वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रेम बहादुर सिंह और महामंत्री रमेश नारायण मिश्र ने इस बात का पुरजोर समर्थन किया। जानकारी के अनुसार परंपरागत तरीकों से उपनिबंधक सौरांव के कार्यालय में जितने भी बैनामों हुआ करते थे। सभी बैनामों पर लेखपालों की रिपोर्ट लगाई जाती थी वही और अधिवक्ताओं द्वारा आरोप लगाया जाता था कि बैनामा का नामांतरण रिपोर्ट लगाकर लेखपाल समय से बैनामा जमा नहीं करते हैं। बल्कि रिपोर्ट के नाम पर मोटी रकम की वसूली की जाती थी। इसी बात को लेकर बैठक में यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि अब लेखपालों की नामांतरण रिपोर्ट की आवश्यकता नहीं है। जिससे लोग परेशान नहीं होंगे। इसी क्रम में वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रेम बहादुर सिंह व महामंत्री रमेश नारायण मिश्र ने भी एक स्वर से इस बात का स्वागत करते हुए आगामी मंगलवार से जितने भी बैनामों होंगे किसी भी नामांतरण रिपोर्ट लेखपालों द्वारा नहीं लगाई जाएगी। बल्कि वही द्वारा जो भी शपथ पत्र बैनामों के समर्थन देगा उसी को आधार मानकर समय से नामांतरण कर दिया जाएगा। यदि वही द्वारा दिए गए शपथ पत्र में किसी भी तथ्य को छुपाया जाएगा तो इसकी संपूर्ण जिम्मेदारी केशव/ विक्रम की होगी। इस मौके पर संयुक्त मंत्री प्रशासन रमेश चंद्र पटेल, बाल गोविंद यादव, राजेंद्र कुमार गुप्ता, राजेश यादव, सहित दर्जनों लोग रहे।

लीकेज गैस सिलेंडर में आग लगने से चाय नाश्ता की दुकान एवं उसमें रखा सामान जलकर खाक



मेजा। क्षेत्र के लखनपुर गांव के समीप स्थित चाय नाश्ता की दुकान में गैस सिलेंडर से आग लगने से हड़कंप मच गया। आनन फानन में ग्रामीणों ने ब्रिगेड को सूचना दिया लेकिन फायर ब्रिगेड की गाड़ी पहुंचने के पहले ग्रामीणों ने आग पर काबू पा लिया। प्रशासनिक अधिकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के लखनपुर गांव निवासी सदीप प्रजापति पुत्र छेदी प्रजापति राष्ट्रीय राजमार्ग 76 के बगल पेट्रोल पंप के सामने चाय, नाश्ता, पानी की दुकान खोल रखी है। शनिवार दोपहर 3 बजे गैस सिलेंडर लीक होने से अचानक दुकान में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। धुएं के गुबार को देखकर लोगों में हड़कंप मच गया। ग्रामीणों में इसकी सूचना आनन फानन में फायर ब्रिगेड को दिया लेकिन जब तक फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर पहुंचती तब तक ग्रामीणों ने आग पर काबू पा लिया। लेकिन तब तक दुकान में रखा हजारी का सामान जलकर राख हो चुका था। पेट्रोल पंप के समीप का मामला होने के कारण लोगों में अफरा तफरी मच गई। दौरेन घंटों दहशत का माहौल बना रहा।

नगर आयुक्त ने किया नाला सफाई का निरीक्षण, दिया आवश्यक निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। आगामी वर्षा ऋतु के निकट एवं ससमय नाला सफाई के दृष्टिगत नगर आयुक्त श्री चन्द्र मोहन गर्ग, नगर निगम, प्रयागराज द्वारा आज दिनांक 15 जून 2024 को नगर निगम स्वास्थ्य विभाग तथा जनकार्य विभाग के द्वारा सफाई कराये जा रहे नाले का निरीक्षण किया गया। इस दौरान अपर नगर आयुक्त श्री दीपेन्द्र यादव, मुख्य अभियन्ता श्री सतीश कुमार, नगर स्वास्थ्य अधिकारी श्री अभिषेक सिंह, अवर अभियन्ता राम सक्सेना, क्षेत्रीय सफाई एवं खाद्य निरीक्षक तथा सम्बन्धित फर्म के ठेकेदार आदि उपस्थित हुए।

सर्वप्रथम नगर आयुक्त द्वारा राजपुर म्योर रोड के नाले का निरीक्षण किया गया इस दौरान नाले का सफाई कार्य मैनुअल कराया जा रहा था। मुटठीगंज नगर महापालिका स्कूल के पास का नाला इस नाले पर सफाई हुई थी लेकिन शिल्ड उठा हुआ नहीं पाया गया। नगर आयुक्त द्वारा मुख्य अभियन्ता तथा अवर अभियन्ता को तत्काल मलवा/शिल्ड उठाये जाने हेतु निर्देशित किया गया।

घोबी घाट का नाले के निरीक्षण के दौरान कार्य धीमी प्रगति से होता हुआ पाया गया नगर आयुक्त द्वारा मुख्य अभियन्ता तथा अवर



अभियन्ता को निर्देशित किया कि नाला सफाई की प्रगति प्रतिदिन चेक करते हुए सूचित करें साथ ही सम्बन्धित फर्म को मैनुअल बढाकर कार्य कराये जाने के निर्देश दिये गये।

80 फिट रोड का नाला अल्लापुर साफ पाया गया। 60 फिट रोड अल्लापुर के नाले पर नाला सफाई कार्य होता हुआ पाया गया कुछ स्थानों पर पक्के स्लैब के कारण नाला सफाई में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा था जिससे

मशीन से नाला सफाई का कार्य नहीं हो पर रहा था। नगर आयुक्त द्वारा मुख्य अभियन्ता तथा अवर अभियन्ता को निर्देशित किया जिन स्थानों पर स्लैब के कारण सफाई कार्य में बाधा उत्पन्न हो रहा है स्लैब को तोड़ते हुए सफाई कार्य कराया जाए तथा तोड़े गये स्लैब पर पटिया रखा जाए जिसे उसे कभी-भी हटाकर मशीनों से भी सफाई कार्य कराया जा सके।

मोरीगेट नाले के निरीक्षण के दौरान नाले की

दीवार की जगहों से टूटी/छतिग्रस्त पायी गयी तथा सफाई कार्य कराया जा रहा था। नगर आयुक्त द्वारा मुख्य अभियन्ता को निर्देशित किया गया की नाले की दीवार की मरम्मत कराये जाने के साथ ही सफाई कार्य हेतु मैनुअल बढाया जाए। डंडिया का नाले पर मशीन तथा मैनुअल से कराया जाता हुआ पाया गया। चाचर नाला बलुआघाट तथा साजन कबाड़ी का नाला के निरीक्षण के दौरान कार्य मैनुअल ही कराया जाता पाया गया।

नगर आयुक्त द्वारा अपर नगर आयुक्त, मुख्य अभियन्ता को निर्देशित किया कि अधिकांश अभियन्ता, अवर अभियन्ता तथा क्षेत्रीय सफाई एवं खाद्य निरीक्षकों की नाला सफाई सम्बन्धित कार्य की समीक्षा करते हुए अधोहस्ताक्षरी को सूचित करें तथा पहले कौन सा नाला सफाई कराया जाना अतिआवश्यक है उसकी कार्ययोजना बनाते हुए तत्काल कार्य कराया जाए। साथ ही नाला सफाई कार्य में लगे हुए सम्बन्धित फर्म से भी समन्वय स्थापित करते हुए किसी भी समस्या का निस्तारण ससमय कराया जा सके। इसके अतिरिक्त नगर आयुक्त द्वारा नगर स्वास्थ्य अधिकारी को निर्देशित किया गया कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रतिदिन 10 से 15 नालों सफाई की प्रगति आख्या से अधोहस्ताक्षरी को अवगत कराना सुनिश्चित करें।

चुनाव बाद फूलपुर प्रथम आगमन पर सपा प्रदेश अध्यक्ष का हुआ भव्य स्वागत



सहरसों। लोकसभा चुनाव के बाद समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल प्रथम आगमन पर लोकसभा फूलपुर क्षेत्र के रुदापुर नहर की पुलिया एवं रामनाथ पट्टी में कार्यकर्ताओं ने फूलमाला से जोरदार स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की अपार सफलता का श्रेय सभी सम्मानित मतदाताओं को जाता है। उन्होंने कहा कि डॉक्टर भीमवार अंबेडकर के संविधान एवं न्याय की जीत हुई है। हमारी पार्टी अन्य पिछड़ा वर्ग एससी, एसटी सहित सर्व समाज के लिए कार्य करेगी। आगामी विधानसभा चुनाव एवं उपचुनाव को लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष के दिशा निर्देश के तहत कुशल संगठन नीति के तहत पार्टी चुनाव लड़ेगी। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष मोहम्मद शकील इस्माइल, जिला अध्यक्ष अनिल यादव, पूर्व जिला अध्यक्ष पंथारी यादव, कृष्णमूर्ति सिंह यादव, मंसूर अहमद, राम अवध पाल, सुषमा भारती, आशुतोष तिवारी, जगदीश कुमार सिंह, राम प्रताप पाल, विश्वनाथ गुप्त, बसंत लाल यादव, राजेश पाल एवं प्रदीप पाल सहित भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

हमें गर्व है कि हम सिर्फ बिजली उत्पादन नहीं करते बल्कि बालिका विकास एवं सशक्तिकरण को भी अपना प्राथमिक दायित्व मनाते हैं : कमलेश सोनी



मेजा। मेजा ऊर्जा निगम द्वारा संचालित बालिका सशक्तिकरण अभियान 2024 की ग्रीष्मकालीन कार्यशाला का शनिवार को समाप्त होने के पश्चात एक समान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें मेजा ऊर्जा निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी कमलेश सोनी बतौर मुख्य-अतिथि एवं अपारजिता महिला समाज की अध्यक्ष श्रीमती अनु सोनी विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रही। उल्लेखनीय है कि यह एक माह लंबी ग्रीष्मकालीन कार्यशाला आसपास के गांवों से चयनित हुई 40 बालिकाओं के लिए काफी लाभदायी रहा जिसमें उन्होंने कई प्रकार की नई गतिविधियों जैसे ड्रामा, थिएटर, कम्प्यूटर, सेल्फ-



बिजली उत्पादन करते हैं जो कंपनी का स्वाभाविक प्राथमिक कार्य है, बल्कि बालिका विकास और सशक्तिकरण को भी कंपनी अपना प्राथमिक कर्तव्य एवं दायित्व मानती है। उन्होंने कहा कि हम अभियान को एक सैद्धांतिक जिम्मेदारी, सामाजिक न्याय, बालिका विकास, और सामाजिक चेतना को प्रतिपादित एवं जागृत करने की परिदृष्टि से भी देखते हैं। समापन समारोह के दौरान बालिकाओं ने एक महीने के प्रशिक्षण से सीखी हुई कलाओं का उत्कृष्ट प्रदर्शन भी किया। कार्यक्रम के दौरान, सभी विभागाध्यक्षगण, महा-प्रबन्धक गण, सीएसआर टीम, ग्रामीण एवं अन्य स्टाफ के लोग प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

दशम अन्तरराष्ट्रीय योग सप्ताह का हुआ शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। दशम अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 2024 के उपलक्ष्य में दिनांक: 15 जून से 21 जून तक जन सामान्य को नियमित रूप से योग से जोड़ने उद्देश्य से आयुष मंत्रालय भारत सरकार द्वारा योग सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है जिसके तारतम्य में जनपद प्रयागराज में इस कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरु प्रसाद मौर्य जी, विधायक फाफामऊ द्वारा दिनांक: 15 जून 2024 को प्रातः 6:00 बजे हनुमन् शहीद चन्द्र शेखर आजाद उद्यान, सिविल लाइन्स प्रयागराज में दीप प्रज्वलन एवं योगाभ्यास से किया गया। मौके पर क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डा0 शारदा प्रसाद, होम्योपैथिक अधिकारी डा0 संजीव वर्मा, क्रीडाधिकारी देवी प्रसाद जिला उद्यान अधिकारी, डा0 राजेश चन्द्र मौर्य, डा0 हेमन्त



सिंह, डा0 दीपक सोनी, डा0 सुमन मिश्रा आयुष विभाग के चिकित्सक व योग प्रशिक्षकों एवं अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा संयुक्त रूप से योगाभ्यास का प्रदर्शन किया गया। डा0 शारदा प्रसाद, क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि इस वर्ष योग सप्ताह की थीम योग स्वयं समाज

के लिए है जिसके अनुक्रम में शनिवार 15 जून से जिले के प्रत्येक तहसील/ब्लाक मुख्यालय, ग्राम पंचायत, अमृत सरोवरों एवं पंचायतों में योग सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है जिसमें जनमानस को स्वस्थ रहने के लिये योग से जोड़ा जा सके। यह भी बताया कि जन सामान्य द्वारा भरत सरकार द्वारा जारी गैडलाइन के अनुसार कामन योग प्रोटोकाल जिसका विडियो (https://bhuvan-app3.nrsc.gov.in/mobile_app/bhuvan_mobile_app.php?proj_code=14, <https://yoga.ayush.gov.in/YAP/YB/Yo-ga-Billboard/Images?lang=en>) पर उपलब्ध है के अनुसार योग करना चाहिये। प्रत्येक योगाभ्यास कार्यक्रम की फोटो एवं प्रतिभागियों की संख्या आयुष कवच एप(Ayushkavach app) पर अपलोड करें जिसमें से उपयुक्त कार्यक्रमों का चयन कर उनकी फोटों विभिन्न मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रदर्शित भी किया जा सकता है, यह भी बताया गया कि दशम अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस दिनांक: 21 जून को भारत स्काउट एण्ड गाइड कालेज मम्फोर्डगंज प्रयागराज में वृहद स्तर पर मनाया जायेगा, जिसमें 6-8 हजार लोगों के प्रतिभाग की सम्भावना है।

दो पक्षों में चले जमकर लाठी-डंडे : मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

जारी। कौंधियारा थाना क्षेत्र के जारी चौकी अंतर्गत ग्राम पंचायत भिस्कुरी में शुक्रवार देर रात 10 बजे आपसी विरोध एवं मजदूरी कार्य करने को लेकर दो पक्षों में मारपीट हो गई। मारपीट में दोनों पक्षों से आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। दोनों पक्षों से सात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कौंधियारा भेजा गया। शीतला प्रसाद पुत्र गंगादीन एवं गोरेलाल उर्फ अमित पुत्र कालू राम के बीच कहासुनी के बाद रात 10 बजे मारपीट हो गई। शोर सुनकर दोनों पक्षों के स्वजन भी मौके पर आ गये। बीच बचाव एवं मारपीट में दोनों पक्ष से महिलाओं सहित आधा दर्जन लोग घायल हो गए। शीतला प्रसाद की तहरीर पर ओम प्रकाश, गोरेलाल एवं बाबे एवं गोरे लाल की तहरीर पर शीतला, रोहित, शशी,दिनेश सहित सात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर घायलों इलाज के लिए भेजा गया पुलिस मामले की जांच कर रही है।



जिलाधिकारी ने जनशिकायतों को समबद्धता के साथ गुणवत्तापूर्ण ढंग से शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित करने के लिए निर्देश

सम्पूर्ण समाधान दिवस-तहसील सदर

जन-शिकायतों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता क्षम्य नहीं

सम्पूर्ण समाधान दिवस पर कुल 46 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनमें से 6 शिकायतों का मौके पर किया गया निस्तारण

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल की अध्यक्षता में शनिवार को सदर तहसील में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी ने जनसमयाओं को सुनते हुए सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को उनके विभाग से सम्बंधित शिकायतों को गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्धता के साथ निस्तारित करने के निर्देश दिये हैं साथ ही साथ उन्होंने यह भी निर्देशित किया है कि शिकायतों के निस्तारण से शिकायतकर्ता को संतुष्ट भी होना चाहिए। जिलाधिकारी ने कहा कि जन-शिकायतों का निस्तारण शासन



की सर्वोच्च प्राथमिकता वाले बिंदुओं में से एक है, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता स्वीकार्य नहीं है। जिलाधिकारी ने समाधान दिवस में आये हुए वरसत, अवैध कब्जा, विद्युत बिलों से सम्बंधित शिकायतों का शीघ्रता से निस्तारण किए जाने का निर्देश दिया है। सम्पूर्ण समाधान दिवस पर कुल 46 शिकायतें आयीं (राजस्व विभाग की 20, पुलिस विभाग की 10 व अन्य विभागों से सम्बंधित कुल 16 शिकायतें), जिनमें से कुल 6 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया। जिलाधिकारी ने शेष शिकायतों के निस्तारण हेतु सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को

शिकायतों को आज ही प्राप्त करते हुए उनको निर्धारित समयसीमा के अन्तर्गत गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण के निर्देश दिए हैं। जिलाधिकारी ने सभी सम्बंधित अधिकारियों को हृदयतः देते हुए कहा है कि शिकायतों का निस्तारण अनिवार्य रूप से निर्धारित समयसीमा के अन्तर्गत हो जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही एवं उदासीनता पाये जाने पर सम्बंधित विभागों के अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जायेगी। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी सदर अभिषेक कुमार सिंह, तहसीलदार सदर सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सम्पूर्ण समाधान दिवस मेजा में 144 शिकायतें मिली

मेजा। तीन माह बाद जून माह के तीसरे शनिवार को मेजा में सम्पूर्ण समाधान दिवस एसडीएम जयजित कौर मिश्रा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस दौरान उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को तहसील दिवस की सभी शिकायतों को पांच दिन में स्थलीय सत्यापन कर समस्याओं का निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शिकायतों की आख्या नहीं हमें निस्तारण चाहिए। इस मौके कुल 144 शिकायतें मिली, जिसमें राजस्व से 66, पुलिस से 36, विकास से 16 और अन्य से 26 शिकायतें दर्ज की गईं। शिकायतों के क्रम में मनु का पूरा के नई बस्ती निवासी सुनीता देवी पत्नी पप्पू शर्मा और अंजू देवी पत्नी हरी प्रसाद ने बताया कि उन्हें बिजली का कनेक्शन नहीं मिला लेकिन मीटर लगाकर बिल भेजा जा रहा है। वहीं बिसरी गांव के ग्रामीणों ने राम बहादुर सिंह द्वारा सड़क को काटकर खेत में मिलाने की शिकायत की। मांडा के ग्राम पंचायत चकडिहा माण्डा में बन रहे अवैध मस्जिद के निर्माण पर रोक लगाने के लिए एसडीएम मेजा को आवेदन दिया गया। एसडीएम मेजा ने कहा कि हम खुद मौके पर जाकर जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करूंगी,



जनहित में अगर ग्राम सभा कि जमीन में इस तरह का कार्य हो रहा तो यह गलत है। एसडीएम मेजा ने आश्वासन दिया कि बिना तहसील प्रशासन के अनुमति के बिना सरकारी भूमि पर निर्माण कैसे हुआ यह जांच का विषय है और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होना चाहिए। सभी शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए अधिकारियों को निस्तारण करने के निर्देश दिए। जानकारी का अभाव व भीषण गर्मी के चलते फरियादियों की संख्या कम रही। फरियादियों की संख्या कम होने के कारण डेढ़ बजे से ही अधिकारी 2 बजे तक बैठे रहे। तहसील की कार्यवाही के

दौरान करीब 12 बजे चार माह से हड़ताल पर चल रहे अधिकारियों ने हंगामा शुरू किया। हालांकि अधिकारिता राजू पांडेय ने नाराज अधिकारियों को समझाया और तहसील दिवस की कार्यवाही बिना रुकावट की जारी रही। इस मौके पर एसीपी रवि कुमार गुप्ता, एनटी मेजा अनुग्रह नारायण सिंह, एनटी लालतारा राजेंद्र सिंह, एडीओ समाज कल्याण सुशांत पांडेय सहित विभिन्न विभागों से संबंधित सभी अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

एसीपी ने बुजुर्ग को कुर्सी पर बैठा कर सुनी फरियाद : सम्पूर्ण समाधान दिवस में आए मेजा के जरूर निवासी 75 वर्षीय अकबर खां ने गांव के दबंग द्वारा निर्माणधीन दीवार को गिरा दिए जाने की अपनी फरियाद एसीपी के पास जब लेकर पहुंचा तो उन्होंने बुजुर्ग को कुर्सी पर बैठाया फिर उसकी समस्या को सुनकर संबंधित दरोगा को मौके पर जाकर मामले को निस्तारण करने के निर्देश दिए।

मिट्टी खनन मामले में तीन चालान एक जेसीबी दो ट्रैक्टर हुए सीज



मऊआइमा। मऊआमा में तालाब की खुदाई करके उसमें से मिट्टी निकालने की सूचना पाकर मौके पर पुलिस पहुंच कर एक जेसीबी दो ट्रैक्टरों को सीज कर चालकों को हिरासत में लेकर चालान भेज दिया। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सराय ख्वाजा में तालाब में से अवैध खनन कर रहे जेसीबी और दो ट्रैक्टरों को सब इंस्पेक्टर आनन्द वर्मा और अमलेश कुमार हमराही पुलिस कर्मियों के साथ थाने लाकर सीज करते हुए चालक अमन गौतम पुत्र राम अजोर, नीरज पुत्र अमरनाथ निवासी सराय ख्वाजा तथा अनिल यादव पुत्र प्यारेलाल निवासी गौहाना थाना बहरिया को कागजात न देखाने पर चालान कर दिया।

संदिग्ध हालात में महिला विद्युत कर्मी की मौत शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया

अपने मामा के घर मऊआइमा के ग्राम चकफात्मा उर्फ

माधवपुर आधी थी विद्युत कर्मी मऊआइमा। अपने मामा के घर आधी विद्युत कर्मी महिला की तबीयत खराब होने पर अस्पताल ले जाया गया जहां उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव का पंचनामा भर कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मिली जानकारी के अनुसार श्रद्धा देवी 34 वर्ष पत्नी स्वर्गीय महेंद्र कुमार पटेल मलाक चौधरी सोरांव के पति विद्युत विभाग में कर्मचारी थे। बताया गया है कि पति के सात आठ साल पूर्व ससुराल छोड़कर अपने मयके टिकरी इस्माईलगंज थरवंत चली आयी। सशुद्ध देवी के दो पुत्रियां छोटी छोटी हैं। बताया गया है कि श्रद्धा देवी अपने मामा के घर मऊआइमा के ग्राम चकफात्मा उर्फ माधवपुर विश्वनाथ पटेल के यहाँ सपरिवार आए हुए थे। जहां बीती रात अचानक श्रद्धा देवी की तबीयत खराब हुई जिसे अस्पताल ले जाया गया जहां उसकी मौत हो गई। सूचना पर पहुंची मऊआइमा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

कार्यालय ग्राम पंचायत थाम्भा अलावलपुर विकास खण्ड मंझनपुर जनपद कौशाम्बी।

(अल्पकालिक निविदा सूचना)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत थाम्भा अलावलपुर विकास खण्ड मंझनपुर जनपद कौशाम्बी में 15 वा केंद्रीय वित्त पंचम राज्य वित्त आयोग, मनरेगा योजना, कायाकल्प योजना, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत शौचालय निर्माण व मरम्मत, नाली निर्माण, नाली मरम्मत, खडन्जा निर्माण, हैण्डपम्प मरम्मत, हैण्डपम्प रिबोर, इण्टरलाकिंग, स्कूल निर्माण व मरम्मत, पंचायत भवन मरम्मत, आंगनवाडी केन्द्र निर्माण व मरम्मत, सोलर लाइट, सोलर पम्प स्ट्रीट लाइट इंटरलाकिंग स्कूल बाउंड्री एमडीएम सेट कैटल शेड व अन्य कार्यों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मों द्वारा दिनांक 18/06/2024 से 23/06/2024 तक सील बन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 24/06/2024 को 03 बजे दिन में उपस्थित फर्मों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2024-25 में कराये जाने वाले सभी कार्यों हेतु प्रभावी होगा।

| | |
|---|---|
| दिनेश पाल पंचायत सचिव विकास खण्ड मंझनपुर जनपद कौशाम्बी | मानसिंह यादव ग्राम प्रधान थाम्भा अलावलपुर विकास खण्ड मंझनपुर जनपद कौशाम्बी |
|---|---|

कार्यालय ग्राम पंचायत बैरसा विकास खण्ड मंझनपुर जनपद कौशाम्बी।

(अल्पकालिक निविदा सूचना)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत बैरसा विकास खण्ड मंझनपुर जनपद कौशाम्बी में 15 वा केंद्रीय वित्त पंचम राज्य वित्त आयोग, मनरेगा योजना, कायाकल्प योजना, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत शौचालय निर्माण व मरम्मत, नाली निर्माण, नाली मरम्मत, खडन्जा निर्माण, हैण्डपम्प मरम्मत, हैण्डपम्प रिबोर, इण्टरलाकिंग, स्कूल निर्माण व मरम्मत, पंचायत भवन मरम्मत, आंगनवाडी केन्द्र निर्माण व मरम्मत, सोलर लाइट, सोलर पम्प स्ट्रीट लाइट इंटरलाकिंग स्कूल बाउंड्री एमडीएम सेट कैटल शेड व अन्य कार्यों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मों द्वारा दिनांक 18/06/2024 से 23/06/2024 तक सील बन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 24/06/2024 को 01 बजे दिन में उपस्थित फर्मों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2024-25 में कराये जाने वाले सभी कार्यों हेतु प्रभावी होगा।

| | |
|---|---|
| दिनेश पाल पंचायत सचिव विकास खण्ड मंझनपुर जनपद कौशाम्बी | कलावती ग्राम प्रधान बैरसा विकास खण्ड मंझनपुर जनपद कौशाम्बी |
|---|---|

कार्यालय ग्राम पंचायत शहजादपुर अंदावा विकास खण्ड कड़ा जनपद कौशाम्बी।

(अल्पकालिक निविदा सूचना)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत अंदावा विकास खण्ड कड़ा जनपद कौशाम्बी में 15 वा केंद्रीय वित्त पंचम राज्य वित्त आयोग, मनरेगा योजना, कायाकल्प योजना, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत शौचालय निर्माण व मरम्मत, नाली निर्माण, नाली मरम्मत, खडन्जा निर्माण, हैण्डपम्प मरम्मत, हैण्डपम्प रिबोर, इण्टरलाकिंग, स्कूल निर्माण व मरम्मत, पंचायत भवन मरम्मत, आंगनवाडी केन्द्र निर्माण व मरम्मत, सोलर लाइट, सोलर पम्प स्ट्रीट लाइट इंटरलाकिंग स्कूल बाउंड्री एमडीएम सेट कैटल शेड व अन्य कार्यों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मों द्वारा दिनांक 18/06/2024 से 23/06/2024 तक सील बन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 24/06/2024 को 01 बजे दिन में उपस्थित फर्मों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2024-25 में कराये जाने वाले सभी कार्यों हेतु प्रभावी होगा।

| | |
|--|---|
| सोहनलाल पंचायत सचिव विकास खण्ड कड़ा जनपद कौशाम्बी | एकता राज ग्राम प्रधान अंदावा विकास खण्ड कड़ा जनपद कौशाम्बी |
|--|---|

डिप्रेशन में आकर युवक ने लगाई फांसी, सुसाइड नोट बरामद



नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र के नैनी स्टेशन रोड स्थित डाकखाने के समीप रह रहे एक युवक ने शनिवार की दोपहर करीब 4 बजे अपने लगे लोहे के गार्ड में नायलॉन की रस्सी का फंदा गले में डालके खुदकुशी कर ली। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। खुदकुशी की वजह आर्थिक तंगी बताई जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार नैनी थाना क्षेत्र के चक रघुनाथ मोहल्ला स्थित नैनी डाकखाने के समीप रह रहे संजय सक्सेना (37) वर्षीय पुत्र श्याम बिहारी सक्सेना जो, कि एनजीओ चलते थे। शनिवार की दोपहर वह करीब 4 बजे लोहे के गार्ड में नायलॉन की रस्सी का फंदा लगाकर झूल गए। जिससे उसकी मौत हो गई। जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। घटना की जानकारी फौरन इलाकाई पुलिस को दी गई। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए मर्चरी भेज दिया। घटना का कारण आर्थिक तंगी बताया गया। पुलिस के अनुसार करीब 4 बजे एक सुसाइड नोट बरामद किया गया। जिसमें उन्होंने अपनी मौत का जिम्मेदार खुद को ठहराया है। और उन्होंने अपनी पत्नी को बच्चे का ठीक ढंग से देखभाल करने के लिए लिखा है। फिलहाल पुलिस मामले में जांच पड़ताल कर रही है।

कार्यालय ग्राम पंचायत शहजादपुर पकसराई विकास खण्ड कड़ा जनपद कौशाम्बी।

(अल्पकालिक निविदा सूचना)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत शहजादपुर विकास खण्ड कड़ा जनपद कौशाम्बी में 15 वा केंद्रीय वित्त पंचम राज्य वित्त आयोग, मनरेगा योजना, कायाकल्प योजना, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत शौचालय निर्माण व मरम्मत, नाली निर्माण, नाली मरम्मत, खडन्जा निर्माण, हैण्डपम्प मरम्मत, हैण्डपम्प रिबोर, इण्टरलाकिंग, स्कूल निर्माण व मरम्मत, पंचायत भवन मरम्मत, आंगनवाडी केन्द्र निर्माण व मरम्मत, सोलर लाइट, सोलर पम्प स्ट्रीट लाइट इंटरलाकिंग स्कूल बाउंड्री एमडीएम सेट कैटल शेड व अन्य कार्यों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मों द्वारा दिनांक 18/06/2024 से 23/06/2024 तक सील बन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 24/06/2024 को 03 बजे दिन में उपस्थित फर्मों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2024-25 में कराये जाने वाले सभी कार्यों हेतु प्रभावी होगा।

| | |
|--|--|
| सोहनलाल पंचायत सचिव विकास खण्ड कड़ा जनपद कौशाम्बी | पूनम यादव ग्राम प्रधान शहजादपुर विकास खण्ड कड़ा जनपद कौशाम्बी |
|--|--|

कार्यालय ग्राम पंचायत पकसराई विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी।

(अल्पकालिक निविदा सूचना)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत पकसराई विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी में 15 वा केंद्रीय वित्त पंचम राज्य वित्त आयोग, मनरेगा योजना, कायाकल्प योजना, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत शौचालय निर्माण व मरम्मत, नाली निर्माण, नाली मरम्मत, खडन्जा निर्माण, हैण्डपम्प मरम्मत, हैण्डपम्प रिबोर, इण्टरलाकिंग, स्कूल निर्माण व मरम्मत, पंचायत भवन मरम्मत, आंगनवाडी केन्द्र निर्माण व मरम्मत, सोलर लाइट, सोलर पम्प स्ट्रीट लाइट इंटरलाकिंग स्कूल बाउंड्री एमडीएम सेट कैटल शेड व अन्य कार्यों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मों द्वारा दिनांक 17/06/2024 से 23/06/2024 तक सील बन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 24/06/2024 को 03 बजे दिन में उपस्थित फर्मों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2024-25 में कराये जाने वाले सभी कार्यों हेतु प्रभावी होगा।

| | |
|---|---|
| मैकूलाल पंचायत सचिव विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी | दीपा देवी ग्राम प्रधान पकसराई विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी |
|---|---|

समर इंटरनशिप कार्यक्रम के अंतर्गत मूट कोर्ट प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने विजेता टीम व समस्त प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान की। प्रयागराज। माननीय जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रयागराज श्री संतोष राय के आदेशानुसार शनिवार को जनपद प्रयागराज के विभिन्न छात्र-छात्राओं के द्वारा समर इंटरनशिप कार्यक्रम के अंतर्गत मूट कोर्ट प्रतियोगिता का आयोजन श्री दिनेश कुमार गौतम सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशन में आयोजित किया गया, जिसमें जनपद प्रयागराज के इलाहाबाद विधि विद्यालय के छात्र-छात्राओं क्रमशः आदित्य तिवारी, आराधना पटेल, प्रतिभा सिंह, अनमोल शर्मा, शिवांशु मिश्रा, निर्भय पाल, प्रियांशु, यशस्वी, शिवेश्वर यादव सृष्टि वर्मा, शिखा मौर्य, नेहा शकील अंसारी, कुमारी सुनेना, खुशी तिवारी, दर्शिका गौर, दिव्यांशु साहब अहमद द्वारा प्रतिभाग किया गया। विजेता टीम को व समस्त प्रतिभागियों को सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रयागराज दिनेश कुमार गौतम द्वारा उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान की गईं। यह जानकारी श्री दिनेश कुमार गौतम सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रयागराज द्वारा प्रदान की गई।

कार्यालय ग्राम पंचायत काजू विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी।

(अल्पकालिक निविदा सूचना)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत काजू विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी में 15 वा केंद्रीय वित्त पंचम राज्य वित्त आयोग, मनरेगा योजना, कायाकल्प योजना, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत शौचालय निर्माण व मरम्मत, नाली निर्माण, नाली मरम्मत, खडन्जा निर्माण, हैण्डपम्प मरम्मत, हैण्डपम्प रिबोर, इण्टरलाकिंग, स्कूल निर्माण व मरम्मत, पंचायत भवन मरम्मत, आंगनवाडी केन्द्र निर्माण व मरम्मत, सोलर लाइट, सोलर पम्प स्ट्रीट लाइट इंटरलाकिंग स्कूल बाउंड्री एमडीएम सेट कैटल शेड व अन्य कार्यों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मों द्वारा दिनांक 17/06/2024 से 23/06/2024 तक सील बन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 24/06/2024 को 11 बजे दिन में उपस्थित फर्मों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2024-25 में कराये जाने वाले सभी कार्यों हेतु प्रभावी होगा।

| | |
|---|---|
| मैकूलाल पंचायत सचिव विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी | रागिनी सिंह ग्राम प्रधान काजू विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी |
|---|---|

कार्यालय ग्राम पंचायत नशीरपुर विकास खण्ड मूरतगंज, कौशाम्बी

पत्रांक-नेमो/शा.पं.अधि./निविदा-2024-25 अल्पकालीन निविदा सूचना दिनांक 15.06.2024

ग्राम पंचायत नशीरपुर में पंचम राज्य वित्त/केन्द्रीय वित्त आयोग/एस0बी0एम0 फेज-02 के अन्तर्गत इण्टरलाकिंग, नाली, सोक पिट, हैण्ड पम्प मरम्मत, हैण्ड पम्प रिबोर, प्रा0वि0/पूर्व माध्यमिक वि0 मरम्मत आदि से सम्बन्धित कार्य हेतु सामग्री आपूर्ति हेतु निविदा दिनांक 17.06.2024 से दिनांक 01.07.2024 तक अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में आमंत्रित की जाती है जो दिनांक 02.07.2024 को प्रातः 11.00 बजे उपस्थित फर्मों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत का अधिकार ग्राम पंचायत में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में प्राक्कलन के अनुसार पृथक-पृथक होगी। कार्य का विवरण निम्नवत् है-

| क्र. सं. | परियोजना का विवरण | प्राक्कलित धनराशि (लाख में) | कार्य पूर्ण करने की अवधि |
|----------|--|-----------------------------|--------------------------|
| 1. | अम्बेडकर पार्क का बाउंड्रीवाल एवं सौन्दर्यीकरण | 4.21 | 3 माह |
| 2. | हैण्डपम्प मरम्मत | 2.00 | 12 माह |
| 3. | प्रशासनिक मद | 2.00 | 12 माह |
| 4. | हैण्डपम्प रिबोर | 1.00 | 03 माह |
| 6. | सफाई किट | 0.50 | 01 माह |
| 6. | आंगनवाड़ी निर्माण | 11.60 | 06माह |
| 7. | पंचायत भवन मरम्मत | 1.5 | 02 माह |

| | |
|--|--|
| रामकिशोर (ग्राम प्रधान) ग्राम पंचायत नशीरपुर विकास खण्ड मूरतगंज, कौशाम्बी | आशीष कुमार केसरवानी शा.पं.अधि./शा.वि.अधि. ग्राम पंचायत नशीरपुर विकास खण्ड मूरतगंज, कौशाम्बी |
|--|--|

कार्यालय ग्राम पंचायत नौढ़िया तरहार विकास खण्ड शंकरगढ़, प्रयागराज

पत्रांक-नेमो/निविदा 2023-24 अल्पकालीन निविदा सूचना दिनांक 15.06.2024

राज्य वित्त/केन्द्रीय वित्त/वर्चुअल एकाउन्ट/मनरेगा योजनाअन्तर्गत वर्ष 2023-24 में प्रस्तावित निम्नलिखित कार्यों हेतु टेण्डर ज्ञापित किया जा रहा है। जो दिनांक 16.06.2024 से दिनांक 01.07.2024 तक किसी भी कार्य दिवस में ग्राम पंचायत नौढ़िया तरहार पर सील बन्द निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 02.07.2024 को निविदा हेतु गठित कमेटी/ निर्माण समिति के सदस्यों के सामने 12 बजे दिन में खोली जायेगी। कार्य तथा अनुमानित लागत का विवरण निम्नवत् है-

| क्र. सं. | कार्य का नाम | नग सं. | अनुमानित लागत | निविदा मूल्य | धरोहर राशि | आपूर्ति की जाने वाली सामग्री | कार्य की अवधि |
|----------|--|--------|---------------|--------------|------------|------------------------------|---------------|
| 1. | राम बाबू साहू के घर से राम भारत के घर तक इण्टरलाकिंग का कार्य | | 70000 | | | | 15 दिन |
| 2. | मंजू के घर से मनोज के घर तक इण्टरलाकिंग तथा पक्की नाली का कार्य | | 300000 | | | | 15 दिन |
| 3. | शेषमणि द्विवेदी के घर से गड़ही तक पक्की नाली का कार्य | | 150000 | | | | 15 दिन |
| 4. | यमुना नदी जाने वाले सम्पर्क मार्ग पर मिट्टी तथा पक्की दीवाल का कार्य | | 250000 | | | | 15 दिन |
| 5. | राम बालक के घर से राम बदन के घर तक इण्टरलाकिंग तथा नाली का कार्य | | 300000 | | | | 15 दिन |

नियम शर्तें : 1. फर्म/आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य होगा। 2. सामग्री की प्रस्तुत दरे पी. डब्ल्यू. डी. से अधिक होगा। 3. कार्य की पूर्ति निश्चित समय सीमा में मानक के अनुरूप किया जाना है तभी भुगतान संभव हो पायेगा गुणवत्ता मानक के कमी पाये जाने पर धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 4. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा। 5. कार्य की अनुमानित लागत का 10 प्रतिशत धरोहर राशि जमा करनी होगी। 6. निविदा शुल्क 500 रुपये निर्धारित है।

| | |
|---|---|
| जान्हवी देवी (ग्राम प्रधान) ग्राम पंचायत नौढ़िया तरहार विकास खण्ड शंकरगढ़, प्रयागराज | प्रदुम्य कुमार ग्राम पंचायत अधिकारी ग्राम पंचायत नौढ़िया तरहार विकास खण्ड शंकरगढ़, प्रयागराज |
|---|---|

कौशाम्बी संदेश

कुएं में मिली बालिका की दो दिन पुरानी लाश

गजब ! कुएं से लाश निकालने के पहले ही परिजनों ने बालिका की कर ली शिनाख्त

अखंड भारत संदेश

भरवारी कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के परसरा गांव में रविवार को एक कुएं में पानी भरने गए लोगों ने कुएं के अंदर एक बालिका का शव उतरता हुआ देखा तो गांव में हड़कंप मच गया आसपास के घरों के लोग मौके पर पहुंच गए मामले की सूचना पुलिस को दी गई कुएं से शव निकालने के पहले ही पड़ोस के रहने वाले रूप चंद्र ने यह कहना शुरू कर दिया कि उसकी पुत्री शिवानी का यह शव है रूपचंद्र के यह कहते ही लोगों में असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो गई कि कुएं से शव बाहर निकालने के पहले रूपचंद्र ने शव को शिनाख्त अपनी पुत्री शिवानी के रूप में कैसे कर ली है। जानकारी के मुताबिक परसरा गांव निवासी शिवानी उम्र 17 वर्ष पुत्री रूपचंद्र तीन दिन पहले अचानक लापता हो गई शिवानी के लापता होने के बाद परिवार के लोगों ने ना आसपास के लोगों से चर्चा की ना मामले की सूचना थाना और चौकी पुलिस को दिया पुत्री के गायब होने के बाद भी उसके परिवार के लोग मामले को दबाते रहे जिस पर मोहल्ले के लोगों को शिवानी के गायब होने में शंका उत्पन्न होने लगी थी कि मामले में कुछ गड़बड़ जरूर है परिवार के लोगों ने शिवानी को खोजने का प्रयास भी नहीं किया शनिवार को सुबह गांव के कुछ बच्चे कुएं में पानी भरने गए थे तो उसमें एक शव



उतरता दिखाई पड़ा जिस पर बच्चों ने हो हल्ला मचाया और भयभीत होकर कुएं से बाहर भाग आए मामले की सूचना गांव में फैली तो मौके पर ग्रामीणों का मजमा लग गया कुएं से शव को बाहर निकाला जाता कि उसके पहले ही रूपचंद्र ने यह कहना शुरू कर दिया कि उसकी पुत्री शिवानी का शव है मौके पर पहुंची पुलिस ने कड़ी मेहनत के बाद कुएं से शव को बाहर निकाल लिया है और कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है बालिका की बड़ी बहन शिवानी की मौत पर

कुछ बताने को तैयार थी लेकिन उसके परिवार के लोगों ने शिवानी की बड़ी बहन को कुछ भी बताने से दबाव डाल दिया है जिससे शिवानी की बड़ी बहन शिवानी की मौत के मामले में कुछ बात बता नहीं सकी है शिवानी की मौत में तमाम रहस्य है बालिका कुएं के अंदर जीवित पहुंची या फिर मौत होने के बाद उसे कुएं में फेंका गया है यह पुलिस की बड़ी जांच का विषय है हालांकि पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मामले में कुछ कहना ठीक होगा।

नगर पंचायत चरवा के चरवा चौराहे पर हो रहे

नाला निर्माण कार्य में हो रही है धांधली

बारह अनुपात एक का बालू सीमेंट का मिश्रण बनाकर नाला की हो रही है दलाई मानक के विपरीत किया जा रहा है नाला निर्माण कार्य अधिकारी मौन

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। नगर पंचायत चरवा के चरवा चौराहे पर नगर पंचायत के तहत नाला का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। जो मानक के विपरीत हो रहा है। शनिवार को चरवा चौराहे पर नाला का निर्माण कार्य चल रहा था। जिसमें मानक के विपरीत सीमेंट व गिट्टी का प्रयोग किया जा रहा है। लोग अपने घरों के सामने नाला की तराई करने लगे तो नाला से पानी बहकर घरों की ओर जाने लगा जिससे लोग आक्रोशित हो गए। वार्ड नंबर 12 चरकमुनी नगर के सभासद धर्मेन्द्र कुमार को जानकारी हुई तो मौके पर पहुंच कर हो रहे नाला निर्माण को



देखकर चौक रह गया। मुन्सी की देखरेख में कराए जा रहे नाला निर्माण को घंटिया बनाए जाने पर सभासद धर्मेन्द्र कुमार ने नाला निर्माण कार्य को रूकवाते हुए अधिशाषी अधिकारी सुभाष चन्द्र से शिकायत करते हुए मौके पर पहुंच कर हो रहे घंटिया नाला निर्माण कार्य को देखने की अपील किया है। सभासद को देख मौके पर सैकड़ों लोग उपस्थित हो गये। हो रहे नाला निर्माण कार्य की तोहीनी करते हुए कहा कि वह नाला

निर्माण कार्य अबकी की बारिश का पानी भी नहीं झेल पाएगा। जिससे नाला का पानी लोगों के घर में घुसने पर मजबूर हो जाएगा। जिससे लोगों का घर भी गिरने से बाज नहीं आएगा। बिना गिट्टी बिछाए गिट्टी के ऊपर से ही दिखावे के रूप में गिट्टी बिछा कर बाहर अनुपात एक का बालू सीमेंट का मिश्रण मसाला बनाकर नाला की दलाई हो रही है। जिससे घंटिया नाला निर्माण को देखकर नगर पंचायत के सभासद सहित लोगों में आक्रोश है।

तहसील दिवस की शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण करें निस्तारण : डीएम

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। लोकसभा चुनाव के चलते संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन बंद था चुनाव समाप्त होने के बाद शनिवार को पहले संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया जहां फरियादियों की भीड़ उमड़ पड़ी है जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में सिराथू तहसील में फरियादियों की समस्याओं को सुना गया और उसके निस्तारण के लिए अधीनस्थों को निर्देशित किया गया जिले के सभी तहसीलों में शनिवार को संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी राजेश कुमार राय एवं पुलिस अधीक्षक वृजेश कुमार श्रीवास्तव ने तहसील सिराथू में जनशिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने राजस्व से सम्बन्धित शिकायतों पर राजस्व एवं पुलिस को संयुक्त टीम को मौके पर जाकर शिकायतों को निस्तारित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने संपूर्ण समाधान दिवस में पैमाइश आदि से सम्बन्धित कोर्ट के आदेश का अनुपालन न कराये जाने की शिकायतें प्राप्त होने पर नाराजगी प्रकट करते हुए सभी राजस्व

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने तहसील सिराथू में जनशिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के लिए निर्देश



निरीक्षकों को निर्देशित किया कि इस प्रकार की शिकायतों का तत्काल निस्तारण सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने सभी अधिकारियों को तहसील दिवस एवं आईजीआरएस पर प्राप्त शिकायतों को गम्भीरता से लेते हुए गुणवत्तापूर्ण/समयान्तर्गत निस्तारित करने के

निर्देश देते हुए कहा कि यह सुनिश्चित किया जाय कि कोई भी शिकायत लम्बित न होने पाये। संपूर्ण समाधान दिवस में कुल 135 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिसमें से 06 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। समाधान दिवस में शिकायतकर्ता शोभा सिंह

निवासी ग्राम-टाण्डा ने प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया कि गांव के ही दबंग व्यक्ति द्वारा खलिहान की भूमि पर अवैध कब्जा कर लिया गया गया है, जिस पर जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी सिराथू को प्रकरण की जांच कर खलिहान की भूमि से अवैध कब्जा हटवाने के निर्देश दिये। इसी प्रकार शिकायतकर्ता दारा सिंह निवासी ग्राम-रम्पुरवा ने प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया कि गांव के ही व्यक्ति द्वारा ग्रामसभा की भूमि पर मकान बना लिया गया है तथा आरसीसी रोड में पिलर गाड़ दिया गया है, जिससे वाहनों के आवागमन में बाधा उत्पन्न हो गई, जिस पर जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी सिराथू को आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। तहसील मंडनपुर में कुल 22 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिसमें से 02 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया तथा तहसील चायल में कुल 33 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिसमें से 03 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ. रवि किशोर त्रिवेदी, अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) प्रबुद्ध सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. सुषेन्द्र कुमार एवं उप जिलाधिकारी महेंद्र कुमार श्रीवास्तव सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारियों उपस्थित रहे।

मॉर्निंग वाक व व्यायाम कर नगर प्रशासन को दे रहे धन्यवाद...

सौंदर्यी कृत धोवीघाट तालाब बना महिलाओं के आकर्षण का केंद्र

अखंड भारत संदेश

अड्डवा कौशाम्बी। आदर्श नगर पंचायत अड्डवा वार्ड नंबर 2 अंबेडकर नगर दलित बस्ती में सौंदर्यी कृत तालाब 2016 2017 में तत्कालीन चेर मैन शांतिदेवी कुशवाहा ने प्रस्ताव दिया था जिसका शासन ने 2 करोड़ 38 लाख अव्ययुक्त किया था। सौंदर्यीकृत तालाब के चारों तरफ 50 लाख रुपए की लाइट से चमकीले व्यवस्था की गई है तालाब के चारों तरफ विभिन्न प्रकार के पुष्प और पौधे लगाए गए हैं जिसकी छटा देखते ही बनती है नगर पंचायत प्रशासन सौंदर्यीकृत तालाब को खूबसूरत सजाया है। मौजूदा समय नगर पंचायत की सैकड़ों महिलाएं मॉर्निंग वॉक के लिए जाती हैं जहां विभिन्न प्रकार के व्यायाम कर अपनी सेहत



आज तंदुरुस्ती का ख्याल रखती हैं और अखबार के रिपोर्टर ने तमाम महिलाओं से बात की महिलाओं ने नगर प्रशासन में विशेष तौर पर अधिशासी अधिकारी रश्मि सिंह का धन्यवाद किया है कि उनकी पहल

से 7 वर्ष बाद नगर पंचायत वाशिंगटन को हरे भरे माहौल में वाकिंग टाकिंग का सौभाग्य प्राप्त हुआ है साफ सफाई अपेक्षाकृत ठीक है केवल तालाब का पानी बदलू करता है। इससे निजात दिलाने के लिए

मॉर्निंग वाक करने वालों ने मांग की है। वहीं अधिशासी अधिकारी रश्मि सिंह ने बताया कि सौंदर्यीकृत तालाब के देखभाल के लिए एक कर्मी नियुक्त है कुछ समस्याएं हैं जिन्हें शीघ्र दूर कर लिया जाएगा।

शौच करने गई किशोरी के साथ मनचले ने किया दुष्कर्म

वीडियो बनाकर वायरल करने की दे रहा है धमकी

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र अंतर्गत एक गांव में शौच करने गई किशोरी के साथ एक मनचले ने दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया और उसका वीडियो बनाकर किशोरी के घर वालों को वायरल करने की धमकी दे रहा है आरोपी कहता है अगर इसकी शिकायत कही किया तो वीडियो वायरल कर के तुमको कही का नही छोड़ेंगे। पीड़ित किशोरी के परिजनों ने मामले की सूचना चरवा थाना प्रभारी को दिया और न्याय की गुहार लगाते हुए घटना की जानकारी दी पीड़ित किशोरी के परिजनों को सूचना पर चरवा पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश में जुट गई है।

ईट लदा बेकाबू ट्रैक्टर ने साइकिल सवार को कुचला मौके पर हुई मौत

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सराय अकिल कोटवाली के कनेली स्थित एक ईट भंडू से ईट लादकर ओवर स्पीड में बेकाबू ट्रैक्टर महिलाघाट गांव की तरफ जा रहा था रास्ते में साइकिल सवार को ट्रैक्टर चालक ने कुचल दिया जिससे साइकिल सवार की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। घटना के बाद ट्रैक्टर चालक ट्रैक्टर सहित भागने की फिराक में था जैसे ही वह भागने की कोशिश किया आस - पास मौजूद लोगों ने ट्रैक्टर और चालक को पकड़ लिया। घटनास्थल पर मौजूद लोगों ने पुलिस को सूचना देकर बुला लिया और पुलिस के पहुंचने पर ट्रैक्टर और चालक को पुलिस के हवाले कर दिया। मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने युवक की लाश को कब्जे में लेकर पोस्ट मार्टम हाउस भेज कर अग्रिम कार्यवाही में जुट गई। जानकारी के मुताबिक सराय अकिल थाना क्षेत्र के कनेली चौकी अंतर्गत जुगराज पुर गांव निवासी मौजू उम्र 18 वर्ष पुत्र जयराम



साइकिल से किसी काम से कनेली गया था कनेली से होकर जुगराज पुर गांव साइकिल से वापस लौटते समय रास्ते में ईट लदा और स्पीड ट्रैक्टर ने युवक को कुचल दिया जिससे उसकी मौके पर तड़प तड़प कर दर्दनाक मौत हो गई है। साइकिल सवार युवक की मौत के बाद परिजनों के बीच कोहराम मच गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने चालक और ट्रैक्टर को कब्जे में लेकर विधिक कार्यवाही में जुट गई। ट्रैक्टर से

कुचल कर साइकिल सवार युवक की मौत के बाद लापरवाह यातायात पुलिस और चौकी पुलिस की पोल खुल गई है। न्यायालय की तत्त्व टिप्पणी के बावजूद ट्रैक्टर में बिना रजिस्ट्रेशन के ट्रावी बांधकर सड़कों पर दौड़ते हुए ट्रैक्टर दिखाई देते हैं। निजी स्वार्थ के चलते थाना पुलिस, चौकी पुलिस और यातायात पुलिस ट्रैक्टर में ट्रावी बांधकर सड़कों पर दौड़ने वाले ट्रैक्टरों पर पूरी तरह से अंकुश नहीं लगा रहे हैं।

न्यूज झरोखा

गंगा दशहरा पर भी नहीं साफ हो सके गंगा घाट



कौशाम्बी। गंगा सफाई का अभियान केंद्र की मोदी सरकार ने 10 वर्षों पहले बड़ी तेजी से चलाया था लेकिन उसके बाद भी गंगा घाट की सफाई नहीं हो सकी है गंगा सफाई के नाम पर हजारों करोड़ों रुपए देश का पैसा पानी की तरह सरकार ने बहा दिया है लेकिन उसके बाद भी गंगा नदी के किनारे गंदगी का अंबार लगा है रविवार को गंगा दशहरे का पर्व है विभिन्न गंगा घाट पर हजारों लोग गंगा स्नान करने पहुंचते हैं लेकिन उसके बाद भी गंगा घाट की सफाई सरकार से लेकर स्थानीय प्रशासन तक में नहीं कराई है जिससे गंगा स्नान करने वाले भक्तों में जबरदस्ती आक्रोश देखने को मिला है। नगर पंचायत दारानगर कड़ा के कालेश्वर घाट में गंगा दशहरा पर भक्तों का मेला लगता है हजारों लोग गंगा स्नान करने पहुंचते हैं इसके साथ सौंदर्यी घाट पल्हाना घाट बदनपुर घाट कड़ा घाट सहित विभिन्न घाट में स्नान करने वाले भक्तों का मेला लगता है लेकिन गंगा नदी के घाट में साफ सफाई की स्थिति बेहद खराब है चारों तरफ गंदगी का अंबार लगा है गंगा किनारे कूड़ा कचरा भरा हुआ है कड़ा के कालेश्वर घाट में महिलाओं को कपड़े बदलने का टीन सेट नगर पंचायत द्वारा बनाया गया है टीन सेट बनाने के नाम पर सरकारी खजाने से रकम निकाल ली गई है लेकिन टीन सेट का निर्माण अधूरा रह गया है कोई भी टीन सेट नहीं है किसी में पानी लगी हुई है गंगा स्नान करने वाली महिलाएं खुले आसमान के नीचे बाहर कपड़ा बदलने के लिए मजबूर हैं।

नाली साफ कर रहे युवक को पूर्व प्रधान ने भाइयों के साथ मिलकर पीटा

अड्डवा कौशाम्बी। सैनी थाना के चक बखियागांव में अपने घर के सामने नाली साफ कर रहे युवक को गांव के ही पूर्व प्रधान व उसके भाई चौकीदार ने परिजनों के साथ मिलकर जमकर लात चूसों से उसकी पीटाई कर दी। इसके बाद भी दिल नहीं भरा तो युवक को चाकू से गोद कर लहलुहान कर दिया। घायल युवक ने इसकी लिखित शिकायत सैनी कोतवाली में करते हुए न्याय की गुहार लगाई। वही मामले की सूचना मिलते ही पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर छानबीन शुरू कर दी है। कन्हैया लाल के मुताबिक शुक्रवार को वह अपने घर के सामने बनी नाली की सफाई कर रहा था। इतने दौरान गांव के ही पूर्व प्रधान रामनरेश गाली गलीज करने लगा जब कन्हैया लाल ने इसका विरोध किया तो रामनरेश अपने भाई राजेंद्र कुमार को भी थाने में चौकीदार है व बेटे राधेचाल तथा पीरुष व आयुष के साथ मिलकर लात चूसों व डंडे से उसकी जमकर पीटाई कर दी इस दौरान पीड़ित के परिजनों ने बीच बचाव कर किसी तरह से उसकी जान बचाई। साथ ही पीड़ित के परिवार को काना का कहना है कि इसके बाद भी विपियों को संतोष नहीं हुआ रात 10:00 बजे फिर से चौकीदार राजेंद्र कुमार ने उस पर चाकू से वार करते हुए उसे लहलुहान कर दिया पीड़ित का आरोप है कि रामनरेश आए दिन उसके साथ गाली गलीज करता है साथ ही उसका भाई राजेंद्र कुमार जोकि थाने में चौकीदार है कहता है अगर थाने जाओगे तो उल्टा तुम्हें ही पीटाया कर केस दर्ज कर दूंगा।



संपादक की कलम से

क्या सचमुच अहंकार से आहत है संघ परिवार

नयी सरकार बनने के बाद से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने 'अहंकार' शब्द को लेकर एक अभियान शुरू कर दिया है। संघ प्रमुख डॉ मोहन भागवत ने अपनी 'संचीय भागवत' में जो नया अध्याय जोड़ा है उसका नाम है 'अहंकार'। डॉ भागवत की भागवत में 'हॉ' में 'हॉ' मिलाने के लिए उनके अवर सह संघ चालक श्रीमान इंद्रेश कुमार जी ने भी 'अहंकार' को लेकर अपनी व्याख्या दी है। पूरा देश इस भ्रम में है कि क्या 'अहंकार' को लेकर संघ और भाजपा और माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी के बीच अनबन हो गयी है ?

देश के लोग पिछले दस साल से भाजपा और उसके शीर्ष नेतृत्व के मन में उपज रहे 'अहंकार' के पौधे को देख रहे है। यह अहंकार अब वटवृक्ष बन गया है। संघ को तो 'अहंकार का ये वटवृक्ष अच्छा लगता है लेकिन देश की जनता को नहीं। देश की जनता ने वर्ष 2024 में जो जनदेश दिया उससे जाहिर है कि जनता 'अहंकार से आहत है। सत्ताधियों के अहंकार का कदाचित लाभ प्रतिपक्ष को भी मिला है और संघ के असंतोष की यही असली वजह है। संघ चाहता था कि सत्ता का अहंकार भी बना रहे और भाजपा बिना बैशाखियों के सतत चलती रहे लेकिन ऐसा हो नहीं सका।

देश का विपक्ष 'अहंकार' के इस मुद्दे को अपना हथियार बनाये इससे पहले ही संघ ने खुद इस मुद्दे को अपने हाथ में ले लिया ताकि भाजपा की लंगड़ी-लूली सरकार के सामने 'अहंकार' कोई मुद्दा न बन जाए। जनता समझे कि संघ अब खुद ही प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के खिलाफ हो गयी है, जबकि हकीकत ये नहीं है। संघ और भाजपा में कोई अनबन नहीं है। ये दोनों एक-दूसरे के बिना एक पल जीवित नहीं रह सकते। हॉ इतना अवश्य है कि संघ परिवार ने मोदी परिवार का मुखौटा लगाकर एक बड़ी भूल कर दी। मोदी परिवार की अवधारणा साधारण सचियों की समझ में नहीं आयी। उन्हें लगा कि मोदी जी संघ परिवार को हड़प रहे हैं, इसलिए वे आम चुनाव में जहाँ-हाँ पीछे हट गए और इसका खमियाजा संघ और भाजपा को उठाना पड़ा।

यदि आप गौर करें तो पाएंगे कि संघ और भाजपा का नेतृत्व इस समय जो पीढ़ी कर रही है वो खुद स्वभाव से 'अहंकारी' है। डॉ भागवत और मोदी जी ही नहीं बल्कि इंद्रेश कुमार भी आक्रामकता के लिए जाने जाते हैं। तीनों हमउम्र हैं। ऐसा भ्रम फैलाया जा रहा है कि मोशा की भाजपा, संघ का नहीं बल्कि अपना 'हिडन एजेंडा' चला रही है, जबकि ये सौ फीसदी गलत है। भाजपा का अपना कोई एजेंडा नहीं है। आज भी संघ इतनी शक्ति रखता है कि मोदी जी को एक झटके में सत्ता से अलग कर दे लेकिन उसके पास मोदी जी जैसे आक्रामकता के साथ संघ के एजेंडे पर काम करने वाला कोई दूसरा नेता है नहीं। अमित शाह का खलनायकत्व भी साफ झलकता है। संघ चाहता है कि जब तक उसका एजेंडा पूरा न हो जाये भाजपा येन-केन सत्ता में बनी रहे। भले ही इसके लिए उसे आने वाले दिनों में बैशाखियाँ और 'वाँकर' ही इस्तेमाल क्यों न करना पड़े।

आपको बता दूँ कि डॉ भागवत ने अहंकार से पहले मणिपुर का मुद्दा भी उठाया जबकि मणिपुर में सत्तारूढ़ भाजपा नहीं बल्कि संघ नाकाम हुआ। भाजपा के सत्ता में आते ही मणिपुर में पूर्णकालिक प्रचारक की नियुक्ति की गयी थी। बी भगैया जैसे प्रचारक वहाँ तैनात किये गए थे, लेकिन मणिपुर में संघ का पास उलटा पड़ गया और जिस तरह की हिंसा हुई उसे संघ अपने पक्ष में भुना नहीं पाया। संघ यदि सचमुच मणिपुर की हिंसा से द्रवित होता तो डॉ भागवत जिस तरह से आज मोशा सरकार को हिदायत या उपदेश दे रहे हैं पिछले साल ही दे सकते थे। प्रधानमंत्री को मणिपुर जाने से यदि किसी ने रोका तो वो संघ ही है। मणिपुर समेत पूर्वोत्तर में अपने पांव जमाने में नाकाम रहा संघ अब चाहता है कि वहाँ हालात मामूल पर आएँ और शायद इसलिए वहाँ के विकास के लिए ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे सुदर्शन और ऊजावान संसद को पूर्वोत्तर मामलों का मंत्री बनाया गया है।

आम चुनाव में भाजपा के कमजोर होकर उभरने से भाजपा के प्रति जनता में अनास्था और न बढ़े इसलिए संघ ने अपना पैतरा बदलते हुए न सिर्फ मणिपुर का राग अलापा बल्कि 'अहंकार' को भी मुद्दा बनाया। संघ लगातार भ्रम पैदा करने की कोशिश करता रहता है। संघ प्रमुख गोरखपुर में उग्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ गुफ्तगू कर ये भ्रम भी फैलाना चाहता है कि संघ मोदी का विकल्प खोज रहा है। जबकि मोदी का विकल्प खुद मोदी जी ही है। वे हिटलर की राह पर चलते हुए बहुत आगे जा चुके हैं और संघ यही चाहता भी था। दरअसल मोदी जी ने वो कर दिखाया है जो गुरु गोलवलकर भी नहीं दिखा पाए थे। मोदी से पहले अटल बिहारी वाजपेयी को भी संघ ने मौका दिया था किन्तु प्रधानमंत्री के रूप में वे मोदी की तरह संघ की कार्यसूची पर काम नहीं कर पाए उल्टे उन्हीं सत्ता में वापसी का मौका भी गंवा दिया।

आने वाले दिनों में आप देखेंगे कि भाजपा और संघ मिलकर देश को उसी दिशा में आगे धकेलेंगे जो पहले से तय है। संसद में शक्ति कम होने की वजह से संघ और भाजपा की यात्रा की रफ्तार थोड़ी धीमी जरूर हो सकती है लेकिन ये रुकने वाली नहीं है। संघ आम चुनाव में घायल हुए मोदी और अमित शाह की जोड़ी की मरहम-पट्टी खुद ही कर उन्हें पीछे से ताकत देने का काम करती रहेगी और ये भ्रम भी बनाये रहेगी की भाजपा और संघ में अनबन है।

बेंगलुरु के डॉक्टरों ने समय से पहले 25 सप्ताह में जन्मी बच्ची को दिया जीवनदान

डॉक्टरों को समाज और लोगों की चिंताओं को पहचानना होगा एक डॉक्टर की मौत चिकित्सा पेशे को परेशान करने वाली बेंगलुरु। एक बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए डॉक्टरों ने समय से पहले जन्मी 25 सप्ताह की एक बच्ची को जीवनदान दिया। जन्म के समय मासूम का वजन मात्र 750 ग्राम था।

बेंगलुरु के क्लाउडनाइन ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के चिकित्सकों ने 25 सप्ताह की अवधि में मां में गर्भाशय-ग्रीवा और गंभीर यूरिनरी इन्फेक्शन (यूटीआई) की पहचान की। अक्षम गर्भाशय ग्रीवा डिजीज गर्भाशय ग्रीवा को छोटा और कमजोर कर सकती है या गर्भावस्था के दौरान इसे बहुत जल्दी खोल सकती है। वहीं, यूटीआई सूजन संबंधी परेशानियों का कारण बनती है, जिससे गर्भाशय में संकुचन होता है और समय से पहले प्रसव का खतरा बढ़ जाता है। गंभीर यूटीआई के कारण 25 सप्ताह में प्रसव के दौरान झिल्ली का फटना शुरू हो गया, जिसके कारण बेंगलुरु की इस महिला ने 750 ग्राम वजन की एक बच्ची को जन्म दिया।

25 सप्ताह की उम्र में, भ्रूण के अधिकांश अंग ठीक से विकसित नहीं होते हैं, और इसलिए समय से पहले जन्मे ऐसे बच्चों के बचने की संभावना बहुत कम होती है। क्लाउडनाइन में कंसल्टेंट नियोनेटोलॉजिस्ट और बाल रोग विशेषज्ञ मोहित सिंघल ने बताया, "जब मां 25 सप्ताह की गर्भवती थी और उसे अक्षम गर्भाशय ग्रीवा और गंभीर यूरिनरी संक्रमण (यूटीआई) का पता चला तो हम परिणाम और बच्चे के जीवित रहने के संभावना को लेकर काफी संदेह में थे।" उन्होंने कहा, "पश्चिमी देशों में 24 से 26 सप्ताह के बीच जन्म लेने वाले लगभग 50-60 प्रतिशत बच्चे जीवित रह सकते हैं। 4 में से केवल 1 बच्चे (25 प्रतिशत) का ही जीवित रहना संभव है।

आओ गंगा नहाएं हम और आप भी

@ राकेश अचल राजनीति से हटकर आइये आज गंगा की बात करते हैं। गंगा हमारे लिए केवल एक नदी नहीं है बल्कि संस्कृति का एक जीवंत प्रतीक है। हम गंगा का पुत्र होने में अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं। गंगा की सौगंध खाते हैं, अपनी सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए गंगाजल उठाते हैं। पाप निवारण के लिए गंगा स्नान करते हैं। और जब कोई बड़ा काम सम्पन्न करने में कामयाब हो जाते हैं तो राहत की सांस लेते हुए कहते हैं - 'चलिए हमने तो गंगा नहा ली!' गंगा के बारे में हर भारतीय जानता है। पूरब का हो, चाहे पश्चिम का, उत्तर का हो या दक्षिण का, सबके लिए गंगा का महत्व है। ये बात अलग है कि सबको गंगा अलग-अलग है। गंगा दरअसल प्रयाग या हरिद्वार में ही नहीं बहती, बल्कि हर व्यक्ति के मन में बहती है। समस्या ये है कि इन तमाम गंगाओं का मिलन होना सुनिश्चित नहीं है। आपने राजकपूर की फिल्म 'संगम' तो देखी ही होगी। इस फिल्म का शीर्षक गीत है ये सवाल खड़े करता है कि 'तेरे मन की ओर मेरे मन की गंगा का मिलन होगा या नहीं?' गीतकार शैलेन्द्र ने जब ये गीत लिखा और शंकर - जयकिशन ने इसे संगीतबद्ध कर मुकेश से गायना था तब ये सोचा भी न होगा कि गंगा एक समय में 'यक्ष-प्रजन बन जाएगी और कोई भी इस सवाल का जबाब नहीं दे पायेगा कि हमारे-आपके मन की गंगा का मिलन आज की सियासत होने देगी या नहीं ?

इश्वर के वजूद को लेकर अक्सर मेरे मन में प्रश्न रहते हैं किन्तु गंगा को लेकर मेरे मन में कभी कोई दुविधा नहीं रही। मैंने जब से होश सम्हाला है गंगा को विभिन्न रूपों में देखा है। गंगा के प्रति अपने पूर्वजों के मन में अगाध श्रद्धा देखी है। हम भारतीयों में से बहुत से आज भी किसी कानून से, किसी अदालत से भले ही न डरते हों लेकिन गंगा से डरते हैं। उनका डर सम्मान की वजह से है। हर भारतीय आज भी गंगा को पाप-नाशिनी मानता है। पतित-पावन मानता है। और ये मान्यता कोई एक दिन में या 2014 के बाद नहीं बनी। ये सदियों, युगों और कल्पों के बाद बनी है। हर भारतीय के घर में गंगा मौजूद मिलेगी। शीशी में, कंटेनर में। आखिरी वक्त में सभी को मोक्ष पाने के लिए गंगा का महत्व है। ये बात अलग है कि सबको गंगा अलग-अलग है। गंगा दरअसल प्रयाग या हरिद्वार में ही नहीं बहती, बल्कि हर व्यक्ति के मन में बहती है। समस्या ये है कि इन तमाम गंगाओं का मिलन होना सुनिश्चित नहीं है। आपने राजकपूर की फिल्म 'संगम' तो देखी ही होगी। इस फिल्म का शीर्षक गीत है ये सवाल खड़े करता है कि 'तेरे मन की ओर मेरे मन की गंगा का मिलन होगा या नहीं?' गीतकार शैलेन्द्र ने जब ये गीत लिखा और शंकर - जयकिशन ने इसे संगीतबद्ध कर मुकेश से गायना था तब ये सोचा भी न होगा कि गंगा एक समय में 'यक्ष-प्रजन बन जाएगी और कोई भी इस सवाल का जबाब नहीं दे पायेगा कि हमारे-आपके मन की गंगा का मिलन आज की सियासत होने देगी या नहीं ?

बारिश की बूंद-बूंद सहेजने की जरूरत

- बाबा मायाराम नदी और पहाड़ हमेशा ही मनुष्य को आकर्षित करते रहे हैं। जब भी कोई आज की भागमभाग वाली जिंदगी से ऊबता है या तनाव में होता है, तो वह जंगल और नदियों के पास जाता है। प्रकृति की ओर दौड़ता है। वहाँ उसे बड़ा सुकून व सबल मिलता है और आश्चर्य होता है। नदियों के किनारे बचपन भी समुद्र होता है। नदी के पानी और रेत में बच्चे खेलते हैं, नहाते हैं और मौजमस्ती करते हैं। पानी अब मौसमी नहीं, स्थायी समस्या बन गई है। हमारे अधिकांश गांव, कस्बे और शहर घासे हो गए हैं। वे पानी के लिए बाहरी स्रोतों पर निर्भर होने लगे हैं। लेकिन पूर्व में यह स्थिति नहीं थी। इस कॉलम में पानी की समस्या कैसे बढ़ी और हम इसका समाधान कैसे कर सकते हैं, इस पर बातचीत करना चाहूंगा। कुछ समय पहले तक पानी के मामले में हमारी गिनती संपन्नता में होती थी। हमारे पास कुएं, तालाब, झरने व झीलें थीं। सदानीया नदियाँ थीं। अच्छे हरे-भरे जंगल थे। लेकिन अब न तो कुएं हैं, तालाब भी कम हो गए हैं, और न ही नदियाँ बची हैं। बारहमासी छोटी नदियाँ भी मौसमी बन गई हैं।

अगर मैं मध्यप्रदेश के सतपुड़ा अंचल की बात करूँ, तो यहाँ की ज्यादातर बारहमासी नदियाँ सूख गई हैं। यहाँ की नदियाँ दक्षिण में स्थित सतपुड़ा पहाड़ से निकलती हैं और उत्तर में जाकर नर्मदा में मिलती हैं। लेकिन इनके सूखने से नर्मदा भी कमजोर हो गई है। इस इलाके में विपुल बन संपदा थी। ये हरे-भरे जंगल नदियों के स्रोत थे। इसलिए इ? नदियाँ को वनपट्टी व वनजा भी कहते हैं। जबकि उत्तर भारत की नदियाँ को हिमजा यानी बर्फ से निकलने वाली नदी कहा जाता है। ये नदियाँ व झरने कल-कल बहते रहते थे। नदियों के किनारे ही सभ्यताएँ पल्लवित पुष्पित हुई हैं। कला, संस्कृति का विकास हुआ है। इन्हीं के किनारे उपजाऊ जमीन के कछार हुआ करते थे, जिससे लोगों की भोजन की जरूरत पूरी होती थी। भोजन व पानी मनुष्य की बुनियादी जरूरत है, जो इनसे पूरी होती रही है। नदियों को पवित्र माना जाता है और उनकी पूजा होती है। धार्मिक स्थानों और पुराणों में भी इनकी गाथाएँ हैं। प्रचुर मात्रा में लोक साहित्य है। सांस्कृतिक रूप से जीवन में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। नर्मदा को तो श्रद्धालु पैदल परिक्रमा करते रहे हैं। इनके किनारे लगने वाले मेले प्रसिद्ध हैं। मेलों में बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र होते हैं। नदी और पहाड़ हमेशा ही मनुष्य को आकर्षित करते रहे हैं। जब भी कोई आज की भागमभाग वाली जिंदगी से ऊबता है या तनाव में होता है, तो वह जंगल और नदियों के पास जाता है। प्रकृति की ओर दौड़ता है। वहाँ उसे बड़ा सुकून व सबल मिलता है और आश्चर्य होता है। नदियों के किनारे बचपन भी समुद्र होता है। नदी के पानी और रेत में बच्चे खेलते हैं, नहाते हैं और मौजमस्ती करते हैं। बेर, मकई जैसे फल खाते हैं। अगर एक नदी सूखती है तो उसके साथ बचपन भी विपन्न हो जाता है।

एक समय नदी की रेत में डंगरबाड़ी (तरबूज-खरबूज की खेती) होती थी। खेती करने वाले केवट-कहार समुदाय के लोगों का उपाय नही होता था। वे यहाँ खेती करते थे, रहते थे और नदी की महिमा के गीत गाते थे। इससे उनकी आजीविका चलती थी। लेकिन अब स्थिति बदल गई है। सैकड़ों सालों से सदानीया नदियाँ, झील, झरने, कुएं और बावडियाँ सूख गई हैं या सूखने के कगार पर हैं। इस कारण मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी से लेकर समस्त जीव-जगत के लिए पानी की समस्या खड़ी हो गई है। गहराते पानी के संकट व नदियों के सूखने का एक कारण जंगलों का सफाया है। जिस तरह गंजे सिर पर पानी डालने से वह सपट बह जाता है, उसी तरह अगर जंगल नहीं होंगे तो पानी बह जाएगा। उसे रोकने के लिए जंगल बहुत ही जरूरी हैं। जंगलों के कारण एक तो बारिश अधिक होती है। लेकिन जंगल नहीं रहने से कम या अनियमित बारिश होने की खबरें आती हैं। जंगलों के अंदर की झड़ियाँ, पौधे और लताओं की जड़ों के कारण मिट्टी पोली व हवादार रहती थी। अतः पानी धरती में जम्ब होता था। इन्हीं जंगल के जीव-जंतु, केचुएँ, मेंढक, साँप बिल बनाते थे, जो भूजल रिसाव में सहयोग करते थे। पेड़ों के पत्तों व उसकी शाखाओं के जरिए पानी धरती का पेट भरता था और इससे भूक्षरण भी नहीं होता था। प्रकृति का जल, जंगल और जैव विविधता के संरक्षण का एक तरीका था, जो गड़बड़ गया है।



है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा देश हो जहाँ कि नागरिक अपने परिचय कि तौर पर अपने देश की किसी नदी का इस्तेमाल करते हैं। चूँकि 16 जून को गंगा दशहरा है, इसलिए मैं आपके सामने गंगा - पुराण लेकर बैठ गया। वरना किसे फुरसत है गंगा पर बात करने की। गंगा को लेकर हम आम भारतीय ही नहीं बल्कि हमारी सरकारें भी बहुत संवेदनशील दिखाई देती हैं लेकिन असल में होती नहीं हैं। वे दुनिया कि पाप धोने वाली गंगा कि शुद्धिकरण और उसके पुनर्जीवन कि लिए 'नामामि गंगे' प्रोजेक्ट तो बना लेते हैं किन्तु उसे भी सियासत के रंग में रंग देते हैं। भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा देते हैं। भारत कि भाग्यविधा चूँकि खुद को गंगा पुत्र कहते हैं इसलिए देश में नामामि गंगे प्रोजेक्ट को उनका दिव्यस्वप्न माना जाता है। भाग्यविधा का गंगा ने तीसरा अवसर दे दिया

लेकिन इस प्रोजेक्ट को आज तक पूरा नहीं किया जा सका। मुमकिन है कोई मजबूरी रही हो। इस परिचयना पर हम भी बात नहीं करना चाहते, अन्यथा कहा जाएगा की हम फिर सियासत पर आ गए। हम और आप साधारण इंसान हैं इसलिए हम और आप ऐसी कोई बात नहीं कर सकते जो असाधारण हो। असाधारण बात करने का हक असाधारण लोगों को ही है। बल्कि असाधारण बातें आजकल केवल अविनाशी लोगों का एकाधिकार माना जाता है। साधारण बात ये है कि हम गंगा को पूजते हैं लेकिन उसकी फिक्र नहीं करते। हमें गंगा कि प्रति फिक्रमंदा होने कि लिए उन देशों से सीखना होगा जिन्हे पास गंगा तो नहीं है लेकिन उनकी नदियाँ गंगा से सौ गुना ज्यादा स्वच्छ हैं। विदेशी अपनी नदियों कि लिए किसी सरकार पर निर्भर नहीं होते। वे ये कामखुद करते हैं, लेकिन हम ये सब नहीं करते। हम गंगा दशहरा पर गंगा को पूजेंगे, उसकी आरती उतारेंगे, दान-पुण्य करेंगे लेकिन उसकी कोख को गंदगी से भर आएँगे। हमारी नब्बे साल की दादी फूलकुंवर अनपढ़ थीं लेकिन जानती थीं कि ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि पर गंगा दशहरा मनाया जाता है। इस दिन गंगा जी की पूजा, गंगाजल से स्नान जरूर करना चाहिए। मान्यता है इससे व्यक्ति के कई जन्मों के पाप थुल जाते है। वे गांव के पास बहने वाली बेतवा को ही गंगा मानकर उसमें डुबकी लगा लेती थीं। उनके मायके कि पास भी गंगा नहीं थी, वहाँ जमुना थी। वे उसे भी गंगा मानती थीं। हमारे पास भी गंगा नहीं बल्कि चंबल है। हम चंबल को ही अपनी गंगा मानते हैं। गंगा को बचाने का मतलब हर नदी

फिर आतंकी हमलें, कायम हो शांति का उजाला

--: ललित गर्ग--:

यह आशंका सच साबित हो रही है कि भाजपा को पूर्ण बहुमत न मिलने पर कश्मीर में आतंकी घटनाएँ बढ़ेंगी एवं पाकिस्तान पोषित आतंकवाद फिर से फन उठाने लगेगा। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद हुए पहले लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड मतदान से पाकिस्तान बौखलाया है। इसी का परिणाम है लगातार हो रहे आतंकी हमलें। इन हमलों में आंतरिक सुरक्षा के लिये नये सिरे से चुनौती पैदा की है। जम्मू में रियासी, कठुआ और डोडा में चार दिनों में चार आतंकी हमले चिन्ता का बड़ा कारण बन है। रविवार को रियासी में श्रद्धालुओं से भरी बस के चालक पर हुए हमले के बाद बस अनियंत्रित होकर खाई में गिर गई थी। जिसमें नौ श्रद्धालुओं की मौत हो गई थी। फिर कठुआ व डोडा में हुए आतंकी हमलों में एक जवान और दो आतंकवादी मारे गए हैं। लम्बे समय की शांति, अमन-चैन एवं खुशहाली के बाद एक बार फिर कश्मीर में अशांति एवं आतंक के बादल मंडराये हैं। धरती के स्वर्ग की आशा पर लगे ग्रहण के बादल छटने लगे थे कि एक बार फिर कश्मीर को अशांत करने की कोशिशें तीव्र होते हुए दिख रही है। केन्द्र में गठबंधन वाली मोदी सरकार के सामने यह एक बड़ी चुनौती है। इन आतंकी घटनाओं को केन्द्र सरकार ने गंभीरता से लिया है। कुछ गिरफ्तारियाँ भी हुईं और हथियार भी बरामद हुए हैं। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए गुरुवार को प्रधानमंत्री ने गृहमंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल व सुरक्षा एजेंसियों के साथ बैठक की है। इसमें आतंकवाद को नई चुनौती से मुकाबले की रणनीति पर विचार हुआ है। दरअसल, नई सरकार बनने की प्रक्रिया के दौरान हुए इन हमलों में पाक की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन पाकिस्तान यह बड़ी भूल कर रहा है, क्योंकि मोदी सरकार की हड़ता एवं साहस को चुनौती देना इतना आसान नहीं है। फिर भी लगातार हुए आतंकी हमले चिंता तो बढ़ा ही रहे हैं। एलओसी से लगते जम्मू के इलाके में आतंकवादी घटनाओं का बढ़ना गंभीर है, चिन्ताजनक है। मारे गये दो आतंकवादियों के पास से पाकिस्तानी हथियार व सामान की बरामदगी बताती है कि पाकिस्तान सत्ता प्रतिष्ठानों की मदद से यह आतंक का खेल फिर शुरू कर रहा है। कहीं न कहीं दिल्ली में बनी गठबंधन सरकार को यह संदेश देने की कोशिश की जा रही है कि पाक पोषित आतंकवादी जम्मू-कश्मीर में शांति एवं अमन को कायम नहीं रहने देंगे। मैंने चुनाव से पूर्व अपनी एक सप्ताह की कश्मीर यात्रा में देखा कि केन्द्र सरकार ने कश्मीर में



विकास कार्यों को तीव्रता से साकार किया है, न केवल विकास की बहुआयामी योजनाएँ वहाँ चल रही है, बल्कि पिछले 10 सालों में कश्मीर में आतंकमुक्त करने में भी बड़ी सफलता मिली है। बीते साढ़े तीन दशक के दौरान कश्मीर का लोकतंत्र कुछ तथाकथित नेताओं का बंधुआ बनकर गया था, जिन्होंने अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिये जो कश्मीर देश के माथे का ऐसा मुकुट था, जिसे सभी प्यार करते थे, उसे डर, हिंसा, आतंक एवं दहशत का मैदान बना दिया। लेकिन वहाँ विकास एवं शांति स्थापना का ही परिणाम रहा कि चुनाव में लोगों ने बड़-चढ़ कर हिस्सा लेकर लोकतंत्र में अपना विश्वास व्यक्त किया। कहा जा सकता है कि राज्य में लोकतंत्र को मजबूत होते देख बौखलाहट में ये आतंकवादी हमले किये जा रहे हैं। दरअसल, केंद्रशासित प्रदेश का शांति-सुकून की तरफ बढ़ना आतंकवादियों की हताशा को ही बढ़ाता है। हाल के दिनों में रिकॉर्ड संख्या में पर्यटकों का घाटी में आना और लोकसभा चुनाव में बंपर मतदान सीमा पर बैठे आतंकियों के आकाओं को रास नहीं आया है। जम्मू के इलाके में आतंकी घटनाओं में वृद्धि शासन-प्रशासन के लिये गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए। इन हमलों में पाकिस्तान की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। उल्लेखनीय है कि रविवार को हुए हमले की जिम्मेदारी जहाँ लश्कर-ए-तैयबा के आतंकी गुट टीआरएफ ने ली तो डोडा में हुए हमले की जिम्मेदारी पाक पोषित जैश-ए-मोहम्मद के एक गुट कश्मीर टाइगरर्स नामक आतंकी संगठन ने ली है। बहरहाल, भारतीय सेना व सुरक्षा बल आतंकवादियों को भरपूर जवाब दे रहे हैं। लेकिन इस माह के अंत में शुरू होने वाली अमरनाथ यात्रा का निर्बाध आयोजन सुरक्षा बलों के लिये बड़ी चुनौती होगी। जिसको लेकर विशेष चौकसी बरतने की जरूरत है। वहीं दूसरी ओर हाल के आतंकी हमले केंद्र सरकार व राज्य प्रशासन को भी आत्ममंथन का मौका देते हैं।

तीन दशकों से कश्मीर घाटी दोषी और निदोषी लोगों के खून की हल्दीघाटी बनी रही है। लेकिन वर्ष 2014 के बाद से, नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से वहाँ शांति एवं विकास का अपूर्व वातावरण बना है। गठबंधन की केन्द्र सरकार के सामने अब बड़ा लक्ष्य है वहाँ आतंक से अमन-चैन तक लाने के चले आ रहे मिशन को सफल करने का, लोकतंत्र को सशक्त बनाने का, विकास के कार्यक्रमों को गति देने का एवं कश्मीर के लोगों पर आयी मुस्कान को कायम रखने का। बेशक यह कठिन और पेचीदा काम है लेकिन राष्ट्रीय एकता और निर्माण संबंधी कौन-सा कार्य पेचीदा और कठिन नहीं रहा है? इन कठिन एवं पेचीदा कार्यों को आसान करना ही तो नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार का जादू रहा है। अब गठबंधन सरकार में भी वे अपने इस जादू को दिखायें। इन आतंकी हमलों ने अनेक प्रश्न खड़े किये हैं। सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि कश्मीर की जनता क्यों राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ नहीं पा रही है? क्या कश्मीरी लोगों में नई व्यवस्था में अपने अधिकारों की सुरक्षा व संपत्ति के अधिकारों को लेकर मन में संशय की स्थिति में वृद्धि हुई है? हमें यह लक्ष्य स्वीकारना चाहिए कि किसी भी राज्य में आतंकवाद का उभरना स्थानीय लोगों के सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकता। वहीं यह भी हकीकत है कि कश्मीरी जनमानस का दिल जीतना शक्ति से नहीं बल्कि उनके अनुकूल नीतियाँ बनाने व लोकतंत्र की बहाली से ही संभव है। अब कश्मीर में आतंक का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला होना ही चाहिए। आए दिन की हिंसक घटनाएँ आम नागरिकों में भय का माहौल ही बनाती हैं। माना कि रोग पुराना है, लेकिन ठोस प्रयासों के जरिए इसकी जड़ का इलाज होना ही चाहिए। कश्मीरियों में अपनी सुरक्षा के प्रति भरोसा जगाना सरकार की पहली जिम्मेदारी है। घाटी में सक्रिय आतंकियों के खाल्ते में सुरक्षा तंत्र ने काफी कामयाबियाँ हासिल की हैं।

चित्रकूट संदेश

डीएम के निर्देश पर सिंचाई विभाग ने शुरू की नदी सफाई

नाव लगाकर हो रही नदी सफाई

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द के निर्देश पर गंगा दशहरा के पहले मंदाकिनी नदी की सफाई का काम सिंचाई विभाग ने युद्ध स्तर पर शुरू किया है। सीतापुर में पत्रालय घाट से लेकर बूढ़े हनुमान मंदिर तक व कर्वी में इंटरकोल से लेकर पुलघाट तक आधा दर्जन से अधिक नाव लगाकर सफाई अभियान शुरू किया।



नदी सफाई करते सिंचाई विभाग के लोग।

जिलाधिकारी से नदी सफाई का अनुरोध किया था। जिलाधिकारी ने सिंचाई विभाग को बैठक में निर्देश दिये थे कि नदी सफाई कराई जाये। डीएम के निर्देश पर सिंचाई विभाग ने सीतापुर व कर्वी में एक साथ

नाव लगाकर सफाई अभियान शुरू किया। रविवार को गंगा दशहरा के पहले विभाग ने नदी को साफ करने का लक्ष्य बनाया है। कर्वी पुलघाट में तो पनसोखना से नदी पट गई थी। यहां घाट पर नहाना भी दूधर

था। शुक्रवार से शुरू हुए अभियान में टूको मलबा नदी से बाहर किया। शनिवार को युद्ध स्तर पर अभियान जारी रहा। सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता इसके प्रसाद के निर्देश पर एई गुरु प्रसाद व जेई

देवेंद्र शुक्ला नदी घाट पर सफाई करा रहे हैं। बुंदेली सेना जिलाध्यक्ष अजीत सिंह ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने कहा था कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। दिल्ली जैसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में पेयजल को हाहाकार मचा है। तीर्थ क्षेत्र में मंदाकिनी नदी यहां की लाइफ लाइन है। पढ़े-लिखे मूख नदी में कचरा फेंककर बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। धर्मभीरु लोग गन्दा पानी घरों में आने पर प्रशासन को कोसते हैं। वहीं लोग परम्पराओं के नाम पर नदी में पालीथीन में भरकर हवन-पूजन सामग्री फेंक रहे हैं। नदी के साथ ये अत्याचार बंद न हुआ तो नदी को बचाना मुश्किल हो जायेगा।

भ्रष्टाचार की भेंट चढी इंटरलॉकिंग सड़क

ठेकेदार रवि त्रिपाठी का कारनामा

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर ब्लॉक के डोंडामाफी गांव में विधायक निधि से हो रहे इंटरलॉकिंग निर्माण कार्य में ठेकेदार रवि त्रिपाठी लाल बालू के स्थान पर क्रशर की डस्ट अव घटिया तीन नम्बर की ईट का प्रयोग कर रहा है। इंटरलॉकिंग कार्य में सीमेन्ट-बालू का कहीं प्रयोग नहीं हो रहा। इंटरलॉकिंग निर्माण कार्य में भ्रष्टाचार के खेल का खुलासा शनिवार को हुआ। बताया गया कि मानिकपुर ब्लॉक के डोंडामाफी में विधायक निधि से बन रहे इंटरलॉकिंग निर्माण कार्य में ठेकेदार रवि त्रिपाठी नदी की बालू का प्रयोग न कर क्रशर डस्ट का प्रयोग कर रहा है। उसकी मनमानी इस कदर है कि कोई कुछ नहीं बोल रहा। ठेकेदार मानक को तक में रखकर निर्माण कार्य कर रहा है। गुणवत्ताहीन कार्य कर ठेकेदार सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आदेशों की



घटिया सामग्री से बन रही सड़क।

धजिया उड़ा रहा है। ठेकेदार के भ्रष्टाचार पर अधिकारी कब अंकुश लगायेंगे। यहीं हाल रहा तो

इंटरलॉकिंग बरसात में उखड़ जायेगी। इस भ्रष्टाचार पर जिम्मेदार ध्यान क्यों नहीं दे रहे।

प्रधान-ठेकेदार कर रहे सरकारी धन का बंदरबाट

चित्रकूट। पहाड़ी ब्लॉक के बछरन गांव में पंचम वित्त/पंद्रहवें वित्त योजना से इंटरलॉकिंग खड़जा निर्माण चंद्रपाल के घर से बालक के घर तक व बच्चा के घर से प्यारे के घर तक बन रहे निर्माण कार्य में घटिया सामग्री प्रयोग की जा रही है। ईटा के ऊपर खड़जा लगाया जा रहा है, जो नियम विपरीत है। ग्रामीणों ने ठेकेदार, सचिव व प्रधान पर आरोप लगाये हैं। शनिवार को पहाड़ी ब्लॉक में घटिया सामग्री से खड़जा निर्माण के आरोप ग्रामीणों ने लगाये। खड़जा निर्माण में घटिया सामग्री देखकर लोग आग बबूला हो गये। इंटरलॉकिंग खड़जे व नाली निर्माण में मानकविहीन घटिया सामग्री लगाई जा रही है। ग्राम पंचायत अधिकारी, प्रधान ने चहेते ठेकेदार को सड़क व नाली निर्माण का टेंडर देते हैं। ठेकेदार ने इंटरलॉकिंग नाली निर्माण में लीपापोती कर रहा है।

मऊ ब्लॉक में मजदूरों से नहीं, मशीनों से हो रहा काम

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। मऊ ब्लॉक के कोपा गांव में मनरेगा कार्य में बड़ा घोटाला सामने आया है। बीडीओ रामजी मिश्रा 60/40 अनुपात कागजों में दौड़ा रहे हैं। ददरी, कोपा, कोटारा खंभा गांव में कागजी आंकड़ों में बढ़ा-चढ़ाकर मजदूरों की हाजिरी भरी जा रही है। शनिवार को ब्लॉक मऊ का घोटाला सामने आया। बताया गया

जांच हो तो भ्रष्टाचार का होगा खुलासा

कि वृद्ध गांवों में मोडबंदी, समतलीकरण, नदी-नाला खुदाई में खुलेआम जेसीबी-ट्रैक्टरों का प्रयोग हो रहा है। धरातल पर मजदूरों से कोई काम नहीं कराया जा रहा। बीडीओ रामजी मिश्रा जब से मऊ ब्लॉक में आसनी हुए हैं, मनरेगा

में बड़ा खेल चल रहा है। प्रत्येक गांव की जांच हो तो बीडीओ से लेकर निचले स्तर के कर्मचारियों की भ्रष्टाचार की बड़ी पोल खुलने के आसार हैं। मजे की बात ये है कि मऊ ब्लॉक के ज्यादातर गांवों में तकनीकी सहायक व सचिव नहीं जाते। ब्लॉक में बैठकर कागजी काम पूरा करते हैं। ये कागजी खेल गोपनीय ढंग से किया जाता है। मामले की निष्पक्ष जांच हो तो मनरेगा में बड़े पैमाने पर घोटाले का खुलासा

योग से होने वाले लाभ की दी जानकारी

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का शुभारम्भ करते अध्यक्ष व भाजपा जिलाध्यक्ष आदि।

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। दशम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की श्रृंखला में योग सप्ताह 15 से 21 जून तक का शुभारम्भ अटल पार्क कोटी तालाब पार्क में सवेरे छह बजे हुआ। बतौर मुख्य अतिथि/नगर पालिका अध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष लखकेश चतुर्वेदी, सीडीओ श्रीमती अमृतपाल कौर, क्षेत्रीय क्रीडाधिकारी



आज से 21 जून तक होंगे योगाभ्यास

विजय कुमार, डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह, ईओ लालजी यादव ने दीप जलाकर किया। शनिवार को क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी बांदा/चित्रकूट डा नरेन्द्र बहादुर सिंह

श्रीमती मंजू केशरवानी, नरेन्द्र नारायण चन्द्रवंशी, आयुर्वेद विभाग के सभी योग प्रशिक्षक व योग सहायकों ने योगिक क्रियाओं का प्रदर्शन किया। सवेरे छह से आठ बजे तक लोगों को योगाभ्यास कराया। योग की उपयोगिता व लाभ नोडल अधिकारी डा आशुतोष तिवारी ने बताई। सीडीओ ने सप्ताह के कार्यक्रमों की जानकारी दी। 18 जून को गणेश वारा परिसर, 20 जून को रामघाट, 21 जून को स्पोर्ट्स स्टेडियम कर्वी में सामूहिक योगाभ्यास से समापन होगा। आज

कांग्रेसियों के निधन पर जताया शोक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कांग्रेस के पूर्व जिला उपाध्यक्ष कृष्णा कोल के पति रामा भाई विनोबा नगर बरगढ़ व पनहाई बरगढ़ के कांग्रेस नेता देवलाल कोल के निधन पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल व कांग्रेस की पूर्व प्रत्याशी रंजना बरातीलाल पांडे, कालीचरण राजपूत, अवधेश करवरीया, विजयमणि त्रिपाठी, यमुना शुक्ला, सत्यनारायण कोल, राजेश, पवन रजक, इंद्रपाल, महेंद्र सिंह, अतुल तिवारी, राकेश पांडे, शिवशंकर खंगार, चुनबाद, शिवगुलाम वर्मा, प्रशांत गुप्ता, अनिल गुप्ता आदि कांग्रेसियों ने शोक संवेदना जताई। कुशल पटेल ने बताया कि देवलाल भाई ने विषम हालातों में कांग्रेस का साथ नहीं छोड़ा। ऐसे कांग्रेसियों के दम पर देश व प्रदेश चल रहा है। रंजना बरातीलाल पांडे ने कहा कि 2022 के चुनाव में देवलाल भाई की तबीयत खराब थी। इसके बाद भी वह कांग्रेस का प्रचार-प्रसार पूरी ताकत से कर रहे थे। कृष्णा कोल के पति हमेशा कांग्रेस के लिए काम करते थे। ऐसे कार्यकर्ताओं के निधन से पार्टी को क्षति पहुंची है। दुख की घड़ी में कांग्रेस परिवार इन परिवारों के साथ खड़ा है।

पूर्व सांसद को मिलेगा समरसता रत्न अवार्ड

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। वर्ष 2018 में श्रेष्ठ सांसद अवार्ड से सम्मानित पूर्व सांसद बांदा-चित्रकूट भैरो प्रसाद मिश्र भूटान की राजधानी थिम्पू में 19 से 21 जून तक अंतर्राष्ट्रीय समरसता मंच से आयोजित-22 समरसता सांस्कृतिक समन्वय सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। उन्हें 21 जून को भारत-भूटान समरसता रत्न अवार्ड दिया जायेगा।

पेयजल आपूर्ति की गुहार

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर कस्बे के शिवनगर मोहल्ले के रामनरेश यादव ने समाधान दिवस में जिलाधिकारी को लिखे पत्र में कहा कि दो महीनों से उसके घर में पेयजल आपूर्ति नहीं हो रही। शनिवार को मानिकपुर कस्बे के शिवनगर मोहल्ले के रामनरेश यादव ने जिलाधिकारी को लिखे पत्र में कहा कि पेयजल आपूर्ति न होने से वह बेहद परेशान है। शिवनगर में कई घर हैं, जहां जलापूर्ति नहीं हो रही। जल संस्थान के अधिकारियों पर आरोप लगाया कि बार-बार सूचना देने के बाद भी पेयजल आपूर्ति नहीं कर रहे। उन्होंने जिलाधिकारी से पेयजल आपूर्ति कराने की गुहार लगाई है।

पालिका बोर्ड की बैठक में आय-व्यय की हुई मंजूरी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नगर पालिका परिषद चित्रकूटधाम कर्वी सभागार में पालिका की विशेष बजट बैठक अध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। बैठक में वित्तीय वर्ष 2024-25 की अनुमानित आय 539241150 व अनुमानित व्यय 531244250 रुपये की मंजूरी दी गई। वित्तीय वर्ष 2023-24 की मूल आय रूपए 386576305 व व्यय 339760054 की बोर्ड से सर्वसम्मति से पृष्टि हुई। शनिवार को बैठक में सदस्यों ने सर्वसम्मति से पिछले वर्ष के आय-व्यय की चर्चा की। बैठक में अधिशासी अधिकारी लालजी यादव समेत वार्ड मेम्बर सुखदेवी, नीतू सिंह, पवन कुमार, संदीप, राजकमल वर्मा, राजकुमार साहू, राजेश पटेल, विनय कुमार त्रिपाठी, सुनीता देवी, नीलम शुक्ला, हेमलता, अरुण कुमार त्रिपाठी, ओमकार यादव, पूजा विश्वकर्मा, मोहम्मद लतीफ, बालराम निषाद, कान्हा केसरवानी, शकुंतला गुप्ता, अनुज निगम, शंकर प्रसाद यादव, शैलेंद्र सोनी, शुभम केशरवानी, विनीत पयासी आदि मौजूद रहे। बैठक में अवर अभियंता संतोष सिंह राठौर, सफाई एवं खाद निरीक्षक कमलकांत शुक्ला, राजस्व लिपिक प्रवीण श्रीवास्तव, राजस्व निरीक्षक लेखा लिपिक सुभाष गुप्ता, ज्ञानचंद गुप्ता, राजेंद्र, राम प्रकाश, अशरफ, रवि, ज्ञानेंद्र, कौशल आदि मौजूद रहे।

विधायक की मौजूदगी में मानिकपुर में हुआ समाधान दिवस, डीएम-एसपी रहे मौजूद

कर्वी में सुनी समस्यायें

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एसडीएम कर्वी सौरभ यादव व सीओ सिटी राजकमल ने तहसील सभागार कर्वी में सम्पूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की शिकायतें सुनकर सम्बन्धित को निस्तारण के निर्देश दिये। भूमि विवाद बाबत मामले राजस्व व पुलिस टीम को मौके पर भेजकर निस्तारण के निर्देश दिये।



समस्यायें सुनते विधायक-डीएम-एसपी।

वेग निस्तारण रजिस्टर का परीक्षण कर निस्तारित आख्या देखी। संबंधित को निर्देश दिये कि जिन समस्याओं का निस्तारण हो रहा है, समस्यारूप को बतायें कि वह निस्तारण से संतुष्ट हैं या नहीं। शनिवार को जिला स्तरीय अधिकारियों से डीएम ने कहा कि शासन से निर्धारित समय सीमा

अंदर समस्या निस्तारण शासन की मंशानुसार गुणवत्तापूर्ण कराया जाये। जिन-जिन विभागों की आज समस्यायें आई हैं। मौके पर जाकर निस्तारित करें। एसडीएम व थाना प्रभारियों से कहा कि भूमि संबंधी मामले में राजस्व, चकबंदी व पुलिस की संयुक्त टीम लेकर मौके पर निस्तारित करें। गोपीपुर में पानी समस्या पर जिलाधिकारी ने

राजापुर में सीडीओ ने सुनी समस्यायें

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सीडीओ श्रीमती अमृतपाल कौर की अध्यक्षता में एसडीएम राजापुर प्रमोद झा, सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय की मौजूदगी में तहसील सभागार राजापुर में सम्पूर्ण समाधान दिवस हुआ। फरियादियों की शिकायतें सुनकर सम्बन्धित को निस्तारण के निर्देश दिये। भूमि विवाद बाबत मामले राजस्व, पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर भेजकर निस्तारण के निर्देश दिये।

एसडीएम मानिकपुर पंकज वर्मा, सीओ मऊ जयकरन सिंह, सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, उप कृषि निदेशक राजकुमार, डीएफओ नरेन्द्र कुमार सिंह, डीडीओ आरके त्रिपाठी, तहसीलदार मानिकपुर अखिलेश कुमार, डीपीआरओ इन्द्र नारायण सिंह, जिला प्रोबेशन अधिकारी पंकज कुमार मिश्रा, डीपीओ पीडी विश्वकर्मा, अग्रणी

दबंगों ने पीट-पीटकर दलित की निर्ममता से की हत्या

हत्याओं की गिरफ्तारी को हो रहे प्रयास: सीओ

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। रैपुरा थाना क्षेत्र के हनुमानगंज लौरी गांव में दबंगों ने एक आदिवासी मजदूर को पीट-पीटकर अधमरा कर दिया था। उसकी इलाहाबाद में इलाज दौरान मृत्यु हो गई। राजापुर सीओ श्रीमती निष्ठा उपाध्याय ने बताया कि टीम बनाकर हत्याओं की गिरफ्तारी के प्रयास किये जा रहे हैं। घटना को हत्या में तरमीम किया है।

आदिवासी मजदूर की दबंगों ने पीटाई कर अधमरा करने की ये घटना 12 जून को अंजाम दी थी। बताया गया कि रैपुरा थाने के हनुमानगंज लौरी का बड़कू कोल पुत्र रामनिहारे कोल को 11 जून को रात आठ बजे वीरेन्द्र सिंह पुत्र श्यामलाल सिंह ने पहले शराब



दलित की मौत की सूचना पर लालतारोड में पहुंची एक दर्जन महिलायें।

पिल्लाई। फिर फ्रिज से पानी लाने को कहा। पानी लाने में देर होने पर जातिसूचक गालियां देते हुए जमकर पीटाई की। फिर वहां शैलेन्द्र सिंह उर्फ शीलू पुत्र अभिलाष सिंह, सुशील सिंह पुत्र हरिनारायण सिंह आ गये। शीलू ने वीरेन्द्र के यहां से शराब लाकर पिलाई। वीरेन्द्र के घर के पास ले गये। उसकी जमकर पीटाई कर हाथ-पैर तोड़ दिये। इस कदर पीटा कि वह अधमरा हो गया। उसे प्रेम सिंह के खेत में फेंक आये। सवेरे पत्नी व मां तथा प्रधान की मदद से वह अस्पताल पहुंचा। अस्पताल से जिला अस्पताल रफर हुआ। वहां से प्रयागराज रेफर कर दिया गया। वहां इलाज दौरान उसकी मृत्यु हो गई। सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय ने बताया कि बड़कू कोल के मृत्यु की सूचना मिली है। पूर्व की धाराओं में हत्या की धारा तरमीम कर दी गई है। हत्याओं की गिरफ्तारी को प्रयास जारी है। सूत्रों ने बताया कि कौशांबी विधायक



कार्यशाला में मौजूद विभिन्न डॉक्टर।

सदगुरु नेत्र चिकित्सालय में विजन 20-20 की हुई कार्यशाला

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। संत रणछोड़दास जी महाराज स्थापित अंतर्राष्ट्रीय खातिलक्ष्य संस्थान सदगुरु नेत्र चिकित्सालय में विजन 20-20 की एक दिवसीय कार्यशाला में उग्र-मन्न, छत्तीसगढ़ के विभिन्न संस्थानों के निदेशक व प्रशासक स्तर के 40 लोगों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला का उद्देश्य नेत्र चिकित्सा क्षेत्र में छोटे-बड़े संस्थान मिलकर कार्य करें। आपस में अनुभव साझा किये। शनिवार को कार्यशाला का शुभारम्भ सदगुरु सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी डा बीके जैन, विजन 20-20 के ट्रेंडर कुलदीप सिंह, प्रसो फाउंडेशन के प्रेसिडेंट जीवीएस मूर्ति, सेवा फाउंडेशन से ग्लोबल के ट्रेंडर अरुण आचार्य, साइट सेक्टर के स्टेट प्रोग्राम लीड प्रमोद त्रिपाठी, विजन 20-20 इंडिया की प्रोग्राम मैनेजर कल्पना यादव, ट्रस्टी डा इलेश जैन

प्रधानमंत्री मोदी ने वैश्विक नेताओं से प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एकाधिकार समाप्त करने का किया आह्वान

बारी (इटली)। जी-7 सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक नेताओं से प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एकाधिकार को समाप्त करने का आह्वान किया और कहा कि समावेशी समाज की नींव रखने के लिए इसे रचनात्मक बनाया जाना चाहिए। इससे पहले पीएम मोदी जो बाइडेन, वोलोदिमीर जेलेन्स्की, जॉर्जिया मेलोनी, ऋषि सुनक, जस्टिन ट्रूडो, यूएन महासचिव एंटोनियो गुटेरेस समेत वैश्विक नेताओं से मुलाकात द्विपक्षीय संबंधों पर भी चर्चा की। मोदी ने इटली के अपुलिया क्षेत्र में जी-7 शिखर सम्मेलन के संवाद सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि ग्लोबल साइबर सुरक्षा के देश वैश्विक अनिश्चितताओं और तनावों का खामियाजा भुगत रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत ने ग्लोबल साइबर सुरक्षा के देशों की प्राथमिकताओं और चिंताओं को विश्व मंच पर रखना अपनी जिम्मेदारी माना है। उन्होंने कहा, ह्यूबल प्रयासों में हमने अफ्रीका को उच्च प्राथमिकता दी है। हमें गर्व है कि भारत की अध्यक्षता में जी-20 ने अफ्रीकी संघ को अपना स्थायी सदस्य बनाया है।



समावेशी समाज की नींव रख पाएंगे। मोदी ने कहा कि भारत कुटिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) को लेकर राष्ट्रीय रणनीति तैयार करने वाले शुरूआती कुछ देशों में शामिल है। प्रधानमंत्री ने कहा, पिछले वर्ष भारत द्वारा आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान हमने एआई के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय शासन-प्रणाली के महत्व पर जोर दिया था। उन्होंने कहा कि ऊर्जा के क्षेत्र में भारत का दृष्टिकोण चार सिद्धांतों उपलब्धता, पहुंच, वहीनीयता और स्वीकार्यता पर आधारित है। उन्होंने कहा, ह्यूबल 2070 तक हॉनेट जीरोहूबल का लक्ष्य हासिल करने की अपनी प्रतिबद्धता पूरी करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। हमें मिलकर आने वाले समय को हठरित युग बनाने का प्रयास करना चाहिए।

जी-7 नेताओं ने शिखर सम्मेलन में मानव तस्करी रोकने पर दिया जोर

बारी। जी-7 देशों के नेताओं ने शिखर सम्मेलन के दूसरे दिन की शुरुआत में प्रवासन पर ध्यान केंद्रित किया और मानव तस्करी से निपटने तथा उन देशों में निवेश बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की, जहां से प्रवासी अक्सर जान खतरे में डालकर यात्रा शुरू करते हैं। इटली के दक्षिणी क्षेत्र पुगलिया में एक लक्जरी रिसॉर्ट में आयोजित इस सम्मेलन में अन्य प्रमुख विषयों पर भी चर्चा हो रही है, जिनमें यूक्रेन को वित्तीय सहायता, गाजा युद्ध, कुटिम बुद्धिमत्ता, जलवायु परिवर्तन, चीन की औद्योगिक नीति और आर्थिक सुरक्षा शामिल है। हालांकि शिखर सम्मेलन के अंतिम घोषणापत्र को लेकर भी कुछ मतभेद उभरे, जिसमें गर्भपात के संदर्भ को शामिल करने पर असहमति की खबर भी आई। शिखर सम्मेलन के मेजबान इटली के लिए प्रवासन विशेष रूप से चिंता का विषय है, जो अफ्रीका, मध्य पूर्व और एशिया में युद्ध और गरीबी से जूझ रहे लोगों के लिए यूरोपीय संघ में प्रवेश के प्रमुख मार्गों में से एक है।

इस मुद्दे पर अपने सख्त रुख के लिए जानी जाने वाली दक्षिणपंथी इतालवी प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी, यूरोप पर प्रवासियों के बोझ को कम करने के तरीके के रूप में अफ्रीकी देशों में निवेश और वित्त पोषण बढ़ाने को लेकर उत्सुक रही हैं। मेलोनी ने गुरुवार को शिखर सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर कहा था, इटली एक अन्य महाद्वीप को पर्याप्त स्थान देना चाहता है जोकि हम सभी के भविष्य का आधार है, वह है अफ्रीका, अपनी कठिनाइयों और अवसरों के साथ ह्यूएएचसीआर के आंकड़ों के अनुसार, 2024 में अब तक 22,000 से ज्यादा लोग समुद्र के रास्ते इटली पहुंच चुके हैं। 2023 में, 157,000 से ज्यादा लोग आए थे और लगभग 2,000 लोग भूमध्य सागर को खतरनाक तरीके से पार करने की कोशिश करते हुए मारे गए या लापता हो गए। अमेरिका भी अपनी दक्षिणी सीमा पर प्रवासियों की बढ़ती संख्या से जूझ रहा है। राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कांग्रेस में एक विधेयक पारित कराने की कोशिश की थी, लेकिन इसमें सफल नहीं हो सके जिसके बाद उन्होंने प्रवासन पर अंकुश लगाने के लिए नई नीतियां पेश कीं। हालांकि, प्रवासी अधिकार अधिवक्ताओं ने नई नीतियों के खिलाफ बृहस्पतिवार को मुकदमा दायर किया, और यह स्पष्ट नहीं है कि वे अमेरिकी अदालतों में कानूनी चुनौतियों का सामना कर पाएंगे या नहीं। शिखर सम्मेलन में पहुंचने के बाद यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष चार्ल्स मिशेल ने कहा कि प्रवासन से निपटना हार्फ आम चुनौती है। इटली ने मेलोनी की प्रवासन व विकास पहल पर जोर देने के लिए कई अफ्रीकी नेताओं को भी आमंत्रित किया है, जिनमें अल्जीरियाई राष्ट्रपति अब्दुल मजीद तबून, केन्याई राष्ट्रपति विलियम रूटो और ट्यूनीशियाई राष्ट्रपति कैस सैयद शामिल हैं। जी-7 नेताओं के बीच कुछ मतभेद दिखाई दिए। फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने शिखर सम्मेलन के अंतिम घोषणापत्र के मसौदे में गर्भपात का उल्लेख न होने पर खेद व्यक्त किया।

भारत ने नेपाल के प्युथन में उच्च प्रभाव वाली सामुदायिक विकास परियोजना के निर्माण की आधारशिला रखी

काठमांडू : भारत ने शुक्रवार को नेपाल के प्युथन जिले में एक स्कूल और छात्रावास भवन की आधारशिला रखी। इस परियोजना को भारत और नेपाल के बीच हुए एक समझौते के तहत एक उच्च प्रभाव वाली सामुदायिक विकास परियोजना (एचआईसीडीपी) के रूप में शुरू किया गया है।

प्युथन जिले के ऐरावती ग्रामीण नगर पालिका-1 में श्री डांग-बैंग माध्यमिक विद्यालय और छात्रावास भवनों का निर्माण 'नेपाल-भारत विकास सहयोग' के तहत 33.92 मिलियन नेपाली रुपये की निविदा लागत पर किया जा रहा है। इस परियोजना के लिए भारत सरकार की वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है।

काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास ने एक आधिकारिक विज्ञापित में कहा कि नेपाल के प्युथन जिले के ऐरावती ग्रामीण नगर पालिका-1 में श्री डांग-बैंग माध्यमिक विद्यालय एवं छात्रावास भवन के निर्माण के लिए आज ऐरावती ग्रामीण नगर पालिका के अध्यक्ष श्री प्रशांत कुमार सोना ने संयुक्त रूप से आधारशिला रखी। नेपाल-भारत विकास सहयोग के तहत भारत सरकार के अनुदान का उपयोग इस विद्यालय के लिए विद्यालय एवं छात्रावास भवन तथा अन्य सुविधाओं के निर्माण के लिए किया जा रहा है। विज्ञापित में कहा गया है कि यह परियोजना ऐरावती ग्रामीण नगर पालिका, प्युथन के माध्यम से क्रियान्वित की जा रही है। यह परियोजना भारत और नेपाल के बीच मजबूत विकास साझेदारी का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसमें कहा गया है कि ऐरावती ग्रामीण नगर पालिका के अध्यक्ष, राजनीतिक प्रतिनिधियों और विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में नेपाल के लोगों के उत्थान के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में भारत सरकार के निरंतर विकाससमर्थन की सराहना की। इस अवसर पर राजनीतिक प्रतिनिधि, सरकारी अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, स्कूल प्रबंधन के प्रतिनिधि, शिक्षक, अभिभावक और छात्र भी मौजूद थे। नए स्कूल और छात्रावास भवन, प्युथन के ऐरावती ग्रामीण नगर पालिका में श्री डांग-बैंग माध्यमिक विद्यालय में छात्रों को बेहतर शिक्षा और आवास सुविधाएं प्रदान करने के साथ-साथ बेहतर शिक्षण वातावरण बनाने और क्षेत्र में शिक्षा के विकास में योगदान देने में लाभकारी होंगे। आधिकारिक विज्ञापित में कहा गया है कि 2003 से, भारत सरकार ने नेपाल में विभिन्न क्षेत्रों में 551 से अधिक एचआईसीडीपी शुरू किए हैं और 490 परियोजनाएं पूरी की हैं। इनमें से 61 परियोजनाएं विभिन्न क्षेत्रों में लुंबिनी प्रांत में हैं, जिनमें प्युथन में 2 परियोजनाएं शामिल हैं।

नेपाल : महत्वपूर्ण द्विपक्षीय वार्ता में बेटी को साथ रखने पर प्रधानमंत्री प्रचण्ड की आलोचना

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचण्ड की आज संसद में विपक्षी दलों ने आलोचना की है। विदेश भ्रमण के दौरान महत्वपूर्ण द्विपक्षीय वार्ता में अपने साथ बेटी को भी बिटाने को लेकर प्रधानमंत्री प्रचण्ड की आलोचना हो रही है।

नेपाल की संसद में विपक्षी सांसदों ने प्रधानमंत्री प्रचण्ड से सवाल किया है कि हाल ही में जब वो भारत की यात्रा पर गए थे तो यह दौरा उनका सरकारी था या पारिवारिक दौरा? नेपाली कांग्रेस की सांसद ईश्वरी न्यौपाने ने कहा कि आखिर प्रधानमंत्री की ऐसी क्या मजबूरी है कि वो हर द्विपक्षीय बैठक में अपनी बेटी को साथ में रखते हैं? उन्होंने कहा कि इससे देश की भावनाओं को धक्का मारना है कि विदेशों में होने वाले महत्वपूर्ण मुलाकातों के दौरान प्रधानमंत्री के साथ बिना किसी प्रोटोकॉल के उनकी बेटी भी रहती है?

राप्रपा के सांसद ज्ञानेश्वर शाही ने कहा कि हाल ही में पीएम प्रचण्ड के द्वारा दिल्ली भ्रमण के दौरान वहां के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हुई द्विपक्षीय वार्ता हो, हर जगह प्रधानमंत्री प्रचण्ड की बेटी का साथ में रहना कूटनीतिक मयादा के विपरीत है। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ महीने पहले भी प्रचण्ड की भारत यात्रा के दौरान भी वहां के एनएसए के साथ हुई मुलाकात में भी बेटी को साथ में रखने की फोटो सार्वजनिक हुई थी, जो अत्यंत दुःखद है। अन्य सांसदों ने भी प्रचण्ड के चीन भ्रमण से लेकर अमेरिका भ्रमण के दौरान भी हर जगह हुई सभी उच्चस्तरीय मुलाकात में बेटी की तस्वीर आना देश की मयादा को कम करता है।

नेपाल की संसद में भारतीय पर्यटकों से दुर्व्यवहार का मामला उठा

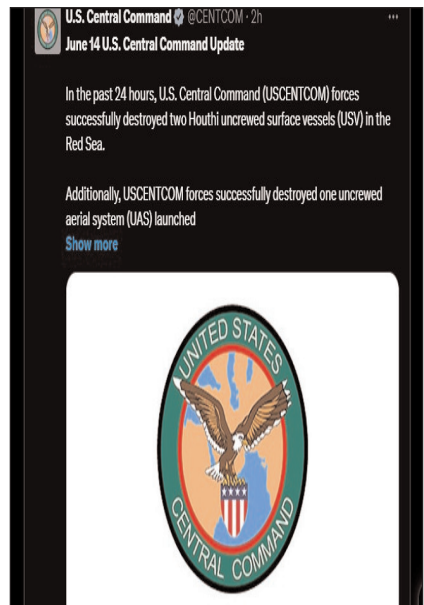
काठमांडू। नेपाल की संसद में भारतीय पर्यटकों के साथ सीमा नाका पर हुए दुर्व्यवहार का मामला संसद में हुआ है। सुरक्षाकर्मियों के दुर्व्यवहार पर सरकार से तत्काल जवाब मांगा गया है। यह मामला प्रतिनिधि सभा में राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के धवल शमशेर राणा ने उठाया। उन्होंने कहा कि हवाई मार्ग से आने वाले भारतीय पर्यटकों के मुकाबले सड़क मार्ग से आने वाले पर्यटकों की संख्या कई गुना अधिक होती है। नेपाल की सीमा में प्रवेश करते समय नेपाल के सुरक्षाकर्मियों उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। इस कारण पर्यटकों की संख्या में कमी हो रही है। प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और पर्यटन मंत्री को संसद में इस पर जवाब देना चाहिए।

नेपालगंज के पूर्व धवल शमशेर राणा ने कहा कि अगर सुरक्षाकर्मियों की आदत नहीं बदली तो पर्यटकों की संख्या कम जाएगी। सुरक्षाकर्मियों पर्यटकों से अवैध वसूली भी करते हैं। राणा ने सरकार से मांग की है कि भारत के लोगों को अधिक से अधिक भारतीय मुद्रा साथ लाने की इजाजत दी जाए, जिससे वो नेपाल आकर दिल खोल कर खर्च करें।

अमेरिका ने यमन में हूटी के सात रडार, एक ड्रोन और दो बिना चालक दल वाले जहाजों को नष्ट किया

वाशिंगटन। अमेरिकी सेना ने यमन में पिछले 24 घंटे में हूटी विद्रोहियों के ईरान समर्थित सात रडार, एक ड्रोन और दो बिना चालक दल वाले जहाजों को सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया। उल्लेखनीय है कि हूटी विद्रोही लाल सागर में जहाजों को लगातार निशाना बना रहे हैं। दो दिन पहले ग्रीक के एक जहाज पर हूटी विद्रोहियों ने हमला भी किया था। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने एक्स पर यह विवरण साझा किया है। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने एक्स पर लिखा है, "यह रडार हूटी विद्रोहियों को समुद्री जहाजों को निशाना बनाने और वाणिज्यिक शिपिंग को खतरे में डालने में मदद पहुंचाते थे। बलों ने लाल सागर के ऊपर यमन के हूटी नियंत्रित क्षेत्र से लॉन्च किए गए एक अनकूड एरियल सिस्टम को भी सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया। यह कार्रवाई नेविगेशन की स्वतंत्रता को रक्षा करने और अमेरिका, गठबंधन और व्यापारिक जहाजों के लिए अंतरराष्ट्रीय जल को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए की गई।"

उल्लेखनीय है कि हाल ही में हूटी विद्रोहियों ने संयुक्त राष्ट्र के नौ कर्मचारियों को भी बंदी बना लिया था। यह सभी कर्मियों यमन के ही रहने वाले हैं। इनमें एक विशेष दूत और महिला भी शामिल है। गाजा में इजराइली हमले के खिलाफ पिछले सात महीने से हूटी विद्रोही लाल सागर से गुजरने वाले जहाजों को निशाना बना रहे हैं।



जॉर्जिया मेलोनी पर बढ़ा 'हिंदुस्तानी' रंग, नमस्ते कर किया मेहमानों का स्वागत

रोम: इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने गुरुवार को जी7 शिखर सम्मेलन में शामिल होने आए दुनियाभर के नेताओं का अभिवादन ह्वनमस्तेह से किया। वह मेहमानों का स्वागत करते वक्त हाथ जोड़कर अभिवादन करते दिखीं। मेलोनी के इस इशारे के कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं, जिसमें नेटिजन्स मेलोनी की तारीफ कर रहे हैं।



वीडियो में मेलोनी को जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज और यूरोपियन कमीशन की अध्यक्ष उसुला वॉन डेर लैयेन को पारंपरिक भारतीय अंदाज में अभिवादन करते हुए देखा जा सकता है।

इटली इस साल 13 से 15 जून तक अपुलिया शहर के बोर्गो एनाजिया (फ्रसानो) में 50वें जी7 शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। शिखर सम्मेलन में रूस-यूक्रेन युद्ध और इजरायल-हमास युद्ध की चर्चा होने की संभावना है। इससे पहले मेलोनी ने 50वें जी7 शिखर सम्मेलन के लिए पहुंचे यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री

रूप में मेलोनी को जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज और यूरोपियन कमीशन की अध्यक्ष उसुला वॉन डेर लैयेन को पारंपरिक भारतीय अंदाज में अभिवादन करते हुए देखा जा सकता है।

इससे पहले मेलोनी ने 50वें जी7 शिखर सम्मेलन के लिए पहुंचे यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री

(स्थानीय समय) इटली पहुंचे। उन्होंने हाल ही में भारतीय जनता पार्टी (इखड) के नेतृत्व वाले एनडीए सरकार में लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री का पदभार संभाला है। प्रधानमंत्री बनने के बाद यह उनकी पहली विदेश यात्रा है।

विश्व नेताओं से करेंगे मुलाकात बता दें कि पीएम मोदी शुक्रवार को जी7 आउटरीच सत्र में भाग लेंगे। उनके साथ, अल्जीरिया, अर्जेंटीना, ब्राजील, मिछ, केन्या, मॉरिटानिया, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, ट्यूनीशिया और तुर्की के नेता भी सत्र में भाग लेंगे। इस दौरान वह मेलोनी सहित विश्व नेताओं के साथ विभिन्न मुद्दों पर द्विपक्षीय वार्ता भी करेंगे।

प्रधानमंत्री के अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक, फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों, जापानी प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा और जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज के साथ द्विपक्षीय बातचीत करने की भी उम्मीद है। ऐसी अटकलें हैं कि वह जेलेन्स्की से भी बातचीत करेंगे, लेकिन अभी तक इसकी कोई पुष्टि नहीं हुई है।

यूक्रेन के हमले में सीमावर्ती गांव में हुई बमबारी, सात की मौत

मॉस्को: यूक्रेन की सेना ने रूसी सीमा क्षेत्र बेलगोरोड में बम बरसाए। रूसी अधिकारियों ने शनिवार को कहा कि रूसी सीमा क्षेत्र बेलगोरोड पर यूक्रेनी गोलाबारी में सात लोग मारे गए हैं। सिविल डिफेंस ने बताया कि, शोबेकिनो कस्बे में ध्वस्त हुए अपार्टमेंट ब्लॉक के मलबे से चार शव निकाले गए हैं। बेलगोरोड के गवर्नर व्याचेस्लाव ग्लैडकोव ने टेलीग्राम पर बताया कि, रेस्क्यू की गई एक महिला जिसे बचाया गया था, उसकी बाद में अस्पताल में मौत हो गई।



ज्यादातर निवासी शहर छोड़ चुके हैं। सीमा के दूसरी ओर यूक्रेनी शहर वोवचस्क है। इसके आसपास रूसी और यूक्रेनी सेनाएं इस समय भीषण लड़ाई लड़ रही हैं। व्याचेस्लाव ग्लैडकोव ने रूसी शहर ओक्त्याबस्की और मूरम में भी एक-एक व्यक्ति की मौत की सूचना दी। शनिवार को शोबेकिनो पर फिर से फायरिंग की गई। यूक्रेन दो साल से भी ज्यादा समय से बड़े पैमाने पर रूसी आक्रमण का सामना कर रहा है। बेलगोरोड का सीमावर्ती क्षेत्र रूसी सैनिकों के लिए तैनाती और रसद के बेस के रूप में काम करता है। पूर्वी यूक्रेनी शहर खार्किव पर भी यहीं से हमला किया जाता है।

इजराइल पर हिजबुल्ला का ताबड़तोड़ हमला- एयर डिफेंस सिस्टम ने कई रॉकेट को हवा में नष्ट किया

यरुशलम। ईरान समर्थित लेबनान के सशस्त्र संगठन हिजबुल्ला ने शुक्रवार को इजराइल पर लगातार तीसरे दिन रॉकेटों से ताबड़तोड़ हमला किया। इजराइली एयर डिफेंस सिस्टम ने जवाबी कार्रवाई करते हुए 35 रॉकेटों में से अधिकांश को मार गिराया। हालांकि कुछ रॉकेट ने इजराइल को नुकसान पहुंचाया है। इसके बाद इजराइली लड़ाकू विमानों और टैंकों ने लेबनान के हिजबुल्ला के कब्जे वाले इलाकों पर हमले किए। इन हमलों में दो लोगों के मारे जाने और कई के घायल होने की सूचना है। ताजा हमले में हिजबुल्ला ने इजराइल के सीमावर्ती शहर किर्यात शिमोना और सीमा के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया। लेकिन सीमावर्ती शहर को महीनों पहले ही खाली कराए जाने से वहां पर कोई जन हानि नहीं हुई। हमले से कई भवनों और कारों को नुकसान हुआ है। इससे पहले मंगलवार को इजराइली हमले में हिजबुल्ला के एक शीर्ष कमांडर के मारे जाने के बाद से सशस्त्र संगठन इजरायल पर लगातार रॉकेट हमले कर रहा है। आठ अक्टूबर, 2023 से जारी इजरायल और हिजबुल्ला की लड़ाई में 300 से ज्यादा हिजबुल्ला लड़ाके और 18 इजरायली सैनिक मारे गए हैं। इसके अतिरिक्त दोनों पक्षों के 90 से ज्यादा नागरिक मारे गए हैं। हिजबुल्ला हमला के समर्थन में इजराइल पर अक्टूबर 2023 से हमले कर रहा है। गाजा में शुक्रवार को भी इजराइली हमले जारी रहे। इन हमलों में 34 लोगों के मारे जाने की सूचना है। इस बीच हमला ने कहा है कि रफाह में इजराइल के हवाई हमले में दो इजराइली बंधक मारे गए हैं। हमला ने कहा है कि 120 बंधक अभी उसके पास हैं। लेकिन इनमें से कितने जीवित हैं, इस संबंध में आधिकारिक जानकारी नहीं है।

पुतिन ने कहा- रूस के कब्जे वाले क्षेत्र से सैनिक हटाने और नाटो में नहीं शामिल होने के वादे पर होगा यूक्रेन से संघर्ष विराम

मॉस्को। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने शुक्रवार को कहा कि रूस के चार क्षेत्रों से अगर यूक्रेन अपने सैनिकों को हटाना शुरू करता है जिसे उसने वर्ष 2022 में अपनी सीमा में मिला लिया था और नाटो में शामिल नहीं होने का वादा करता है तो वे तत्काल संघर्ष विराम का आदेश देने के साथ और वार्ता शुरू करेंगे। लेकिन यूक्रेन ने पुतिन के इस प्रस्ताव को ह्यूबेतुकाहू करार दिया है रूसी राष्ट्रपति का बयान ऐसे समय आया है जब जी-7 के सदस्य देशों समेत कई वैश्विक नेता इटली में जुटे हैं और यूक्रेन में शांति कायम करने के प्रयासों के तहत स्विट्जरलैंड इस सप्ताहांत में कई वैश्विक नेताओं के सम्मेलन की मेजबानी करने वाला है जिसमें रूस शामिल नहीं होगा।

क्रीव के लिए पुतिन का प्रस्ताव अनुपयोगी ही लगता है क्योंकि वह नाटो सैन्य गठबंधन में शामिल होना चाहता है। वहीं, यूक्रेन ने यह मांग भी की है कि रूस उसके सभी क्षेत्रों से अपने सैनिक हटा ले। रूसी राष्ट्रपति ने शांति के लिए जो व्यापक मांग पत्र तैयार किया है उसमें यूक्रेन का गैर-परमाणु देश का दर्जा, उसके सैन्य बलों पर पाबंदियां और यूक्रेन में रूसी भाषी लोगों के हितों की रक्षा करना शामिल हैं। पुतिन ने यूक्रेन में युद्ध को समाप्त करने के लिए अपना शर्तें स्पष्ट रूप से रखी हैं लेकिन इसमें कोई नई मांग शामिल नहीं है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्यम् समिति
द्वारा विपिन इन्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
956333000
Email:-
akhandbharatsandesh@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।